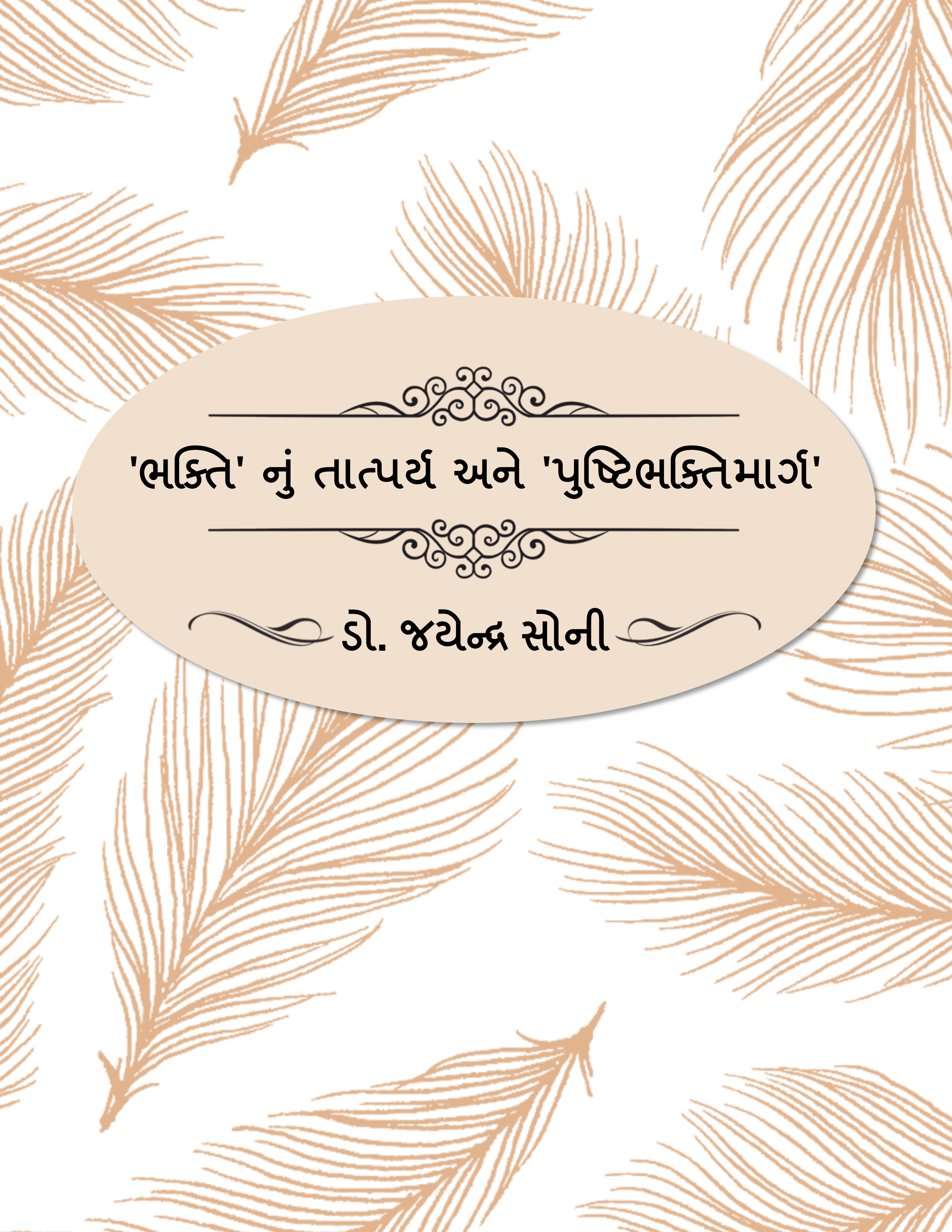

'ભક્તિ' નું તાત્પર્ય અને 'પુષ્ટિભક્તિમાર્ગ'

ડો. જયેન્દ્ર સોની

'ભક્તિ' નું તાત્પર્ય અને 'પુષ્ટિભક્તિમાર્ગ'

(*'ભક્તિ' નું તાત્પર્ય અને 'પુષ્ટિભક્તિમાર્ગ'* was one of Dr. Jayendrabhai Soni's message segments which was delivered on mediums like Whatsapp groups and his Facebook account. Here is a collated document of all the messages related to this segment.)

∗ 'भक्ति' नुं तात्पर्य अने 'पुष्टिभक्तिमार्ग' (१) ∗

****

भारतना मूर्धन्य तत्त्वचिंतक डो. राधाकृष्णने कह्यु छे के "धर्म ए आत्मा नो परमात्मा साथे नो 'अध्यात्म योग' छे". मानवी नुं अस्तित्व समग्र ब्रह्मांड जेमांथी आविर्भूत थयुं छे ए 'परम तत्त्व' नुं अंश रुपे प्रकटीकरण छे. तेथीज मानव हृदय नुं परमतत्त्व प्रत्येनुं आकर्षण एक स्वाभाविक प्रक्रिया छे. मनुष्यनी ईश्वर प्रत्ये खेंचावानी क्रिया ए एक प्रकारनी झंखना छे. तेथी ज तेने कविओए पण जुदी जुदी रीते तेनी अभिव्यक्ति करी छे. गुजराती कवि सुंदरमे - "युगोथी धीखेला प्रखर सहरा नी तरस" कही छे , तो कविवर रविन्द्रनाथ टागोरे तेने "मां तरफ धसता बालक नी दोट" बतावी छे.

ए परमतत्त्व ने समजवानो प्रयास वेद काल थी ज प्रारंभ थयेलो छे . उपनिषदोमां अनेक स्थाने परमतत्त्व नो उल्लेख जोवा मले छे. तेमां प्राचीन ऋषि मुनिओए ते 'सत्'नुं - 'परमतत्त्व' नुं जे दर्शन कर्युं हतुं, तेनुं वर्णन तेमां प्राप्त थाय छे. मानवी नी वैचारिक मर्यादाओना कारणे ईश्वरने माटे 'पुरुष' शब्द वपरायो छे. मनुष्य पण पुरुष नामथी ओलखातो होवाथी 'परम तत्त्व' माटे "उत्तम पुरुष" - "पुरुषोत्तम" संबोधन करवामां आव्यु छे. परंतु तेना वास्तविक स्वरुपनी अभिव्यक्ति करवानी मर्यादा ने कारणे वेदोपनिषद मां तेने "सत्" (REALITY) कहेवामां आव्युं छे. तेथी ज ऋग्वेद कहे छे, - "एकम् सत् विप्रा: बहधा वदंति" (१.१६४.४६). अर्थात् एकज 'परमतत्त्व' ने विद्वानो अलग अलग नाम थी समजावे छे .अहीं 'सत्' शब्द थी 'परम तत्त्व ' नो ज बोध अपायो छे. .....क्रमश: ....

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

∗ 'भक्ति' नुं तात्पर्य अने 'पुष्टिभक्तिमार्ग' (२) ∗

****

आपणा तत्त्वदृष्टाओ कहे छे के ब्रह्मांड अगम् परमतत्त्व थी व्याप्त छे . ईशावास्य उपनिषद कहे छे - "ईशावास्यमिदं सर्वम् यत्किंच जगत्यां जगत". आ ब्रह्मांड नो प्रत्येक पदार्थ 'ईश' तत्त्वनुं ज प्रगटीकरण छे , जे ईशतत्त्व अव्यक्त होवाना कारणे तेनी शब्दो द्वारा अभिव्यक्ति थई शकती नथी. प्रत्येक पदार्थ मां व्याप्त रहेली कोईक गूढ़ सत्ता छे जेने जोई शकाती नथी के शब्दोमां तेनुं वर्णन करी शकातुं नथी. तेम छतां तेनो अनुभव अवश्य थाय छे. आपणा अंत:करणमां तेनी अनुभूति जरुर थाय छे.

आपणी पुराण कथाओ, आचार्यो नी वाणी, संतो - भक्तों द्वारा रचायेल कीर्तनो, पदो मां करवामां आवेलुं वर्णन तेमणे करेला परमात्माना अनुभव ना पुरावा छे. ते श्रद्धालु भक्तोने थयेली अनुभूति नी गाथा

छे, जेने परमतत्त्व ना अस्तित्व नी साबिती कही शकाय.

परमतत्त्व ने पामवा - समजवाना प्रयत्नो अनेक प्राचीन ऋषिओ - तपस्वीओए योग साधना द्वारा कर्या छे अने तेने समजाववा ना प्रयास वेदादि शास्त्रोमां तेमणे कर्यो छे. ऋषि मुनिओ ए 'सत्' नुं जे दर्शन करेलुं तेनुं वर्णन विविध प्रकारे उपनिषदो मां जोवा मले छे.

भगवान श्रीकृष्णे गीताना सातमां अध्यायमां ते अगम तत्त्व विशे अर्जुनने उपदेश आपतां कह्युं छे के ते 'परमतत्त्व' ने जाण्या पछी लोकमां बीजुं विशेष जाणवानुं रहेतुं नथी (७/२). ते परमात्मा ने जाणवो, एज मनुष्य नुं मुख्य कर्तव्य छे .तेने जाण्या पछी तेने माणी शकाय, तेनो अनुभव करी शकाय, तेनो आनंद मेलवी शकाय ! .... क्रमश:......

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

* 'भक्ति' नुं तात्पर्य अने 'पुष्टिभक्तिमार्ग' (३) *

****

'परम तत्त्व' नी प्राप्ति माटे दुनीयामां जुदा जुदा समये अलग अलग मार्गो अनेक महापुरुषोए बताव्या छे, जेना कारणे अनेक धर्मो अने संप्रदायो अस्तित्व मां आव्या छे. सौ कोईए विभिन्न प्रकारनी साधना प्रणाली बतावी छे. बधा ज धर्मो अने संप्रदायो नुं प्रयोजन आत्मा ना परमात्मा साथे योग माटे छे. तदर्थ अनेक संतोए - आचार्यो ए धर्माचरण ना अनेक प्रकारे उपदेश आप्या छे. धर्मने अंत:करणनी वृत्ति कही शकाय, जे मनुष्य मां ओछा-वत्ता प्रमाणमां रहेली होय छे, जेना कारणे ये धर्माचरण करवा प्रेराय छे.

वेदकाल थी मांडी आज पर्यंत अनेक तत्त्व-विचारकोए धर्म विशे पोतपोतानी समज मुजब भिन्न-भिन्न रीते तेनी प्रस्तुति करी छे. केटलाक विचारकोए धर्मने जीवनने परमात्मा मां जीववानी रीत बतावी छे, तो केटलाके परमात्मा ने पामवानी केडी बतावी छे. तेने माटे विविध प्रकार नी आचार पद्धतियो अस्तित्व मां आवी छे.

भगवान ने प्राप्त करवाना शास्त्रोमां मुख्यत्वे त्रण मार्गों सूचववामां आव्या छे. प्राचीन काल मां याज्ञवल्क मुनीए 'ज्ञानमार्ग' नो निर्देश क्यों छे , जनक विदेहीए 'कर्ममार्ग' बताव्यो छे, ज्यारे नारदजी द्वारा 'भक्तिमार्ग' वडे प्रभुनी प्राप्ति करवाना प्रमाण पुराणोमां उपलब्ध थाय छे. तेमणे राचेला "भक्तिसूत्रो" मा भक्तिनु स्वरूप तेमणे समाजाव्यू छे.

भगवाने गीतामां पण अर्जुनने कर्मयोग, ज्ञानयोग अने भक्तियोग नो महिमा विस्तार थी समजाव्यो छे अने तेनी उत्तरोत्तर विशेषता बतावी छे. श्रीमद् भागवत तो भक्ति नी संहिता कहेवाय छे.

आ त्रणेय मार्गोनी आगवी लाक्षणिकताओ तेमज मर्यादाओ छे. ज्यारे श्रीवल्लभाचार्यजीने तेमना शिष्ये पुछेलुं के 'कर्ममार्ग' मोटो के 'ज्ञानमार्ग' ?, त्यारे तेमणे खुलासो क्यों हतो के जेने जे मार्ग रुचे, जेमां जेनी निष्ठा होय, तेने माटे ते मार्ग मोटो गणाय, परंतु उत्तम तो 'भक्तिमार्ग' गणाय केमके तेनाथी मनुष्य कृतार्थ थाय छे. ....क्रमश: ....

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

* 'भक्ति' नुं तात्पर्य अने 'पुष्टिभक्तिमार्ग' (४) *

****

'कर्ममार्ग' अने 'ज्ञानमार्ग' कष्टसाध्य छे. तेमा फल पण स्वर्गादि नु सुख के मोक्ष प्राप्ति छे. कर्ममार्ग नु फल अनित्य छे. ते ज्यां सुधी पुण्यउपभोग थाय त्यां सुधी ज होय छे. तेने माटे देश, काल, द्रव्य, कर्म , कर्ता, मन्त्र शुद्धि आवश्यक छे, जे कलियुग मा दुर्लभ छे.

ज्ञानमार्ग मा परमात्मा नु ध्यान, योग के समाधि, आध्यात्मिक चिंतन तेमज 'साधन-चतुष्ट्य' - शम, दम, वैराग्य इत्यादि द्वारा भगवान ना साक्षात्कार नो मार्ग छे. गीतामा पण भगवाने सात्विक, राजस आने तामस ज्ञान ना प्रकार बताव्या छे. परंतु आ मार्गे पण विरल पुरुषो ज जई शके छे. ते सर्वने माटे सुलभ नथी.

त्रीजो मार्ग छे 'भक्तिमार्ग', जे अन्य बे मार्गो थी सरल छे. आ मार्ग भगवान् प्रत्ये ना प्रेम नो मार्ग छे, जे पापी के पुण्यशाली, ज्ञानी के अज्ञानी, स्त्री के पुरुष, ब्राह्मण के शुद्र बधा ने माटे उपलब्ध छे. तेमा भगवान नी स्तुति, प्रार्थना, भजन, नामस्मरण, जप, पूजा अर्चन वगेरे नो समावेश थाय छे. गीतामा तेने 'राजविद्या' बतावी छे, अर्थात मुख्य मार्ग कह्यो छे. ज्ञान अने कर्म करता भक्ति नी श्रेष्ठता बतावी छे.

भक्ति मा भक्ते पोताना अहम् नो त्याग करी भगवान नी शरणागति स्वीकारवा नी होय छे, अने भगवान तेनी संपूर्ण जवाबदारी पोताना माथे ले छे. तेथीज भगवान् गीतामा कहे छे के "जेओ अनन्यभावे मारु चिंतन करता मने उपासे छे, तेमनु योग-क्षेम हुं वहन करु छु."

भक्ति तत्त्व नु मूल वेद नी संहिता मा मले छे, जेमा विभिन्न देवोने उद्देशी ने स्तुति के प्रार्थना करवामा आवी छे. ते स्तुतिओ मा दास्य तथा सख्य भक्ति प्रकट थाय छे. उपनिषदोमा पण अनेक स्थाने भक्ति नो संकेत प्राप्त थाय छे.

भक्ति ना स्वरूप नी विशेष छनावट 'नारद पंचरात्र' अने शांडिल्य 'भक्तिसूत्रो' माँ करवा मा आवी छे. नारदजी भक्तिने "परम प्रेमरूपा" कहे छे, ज्यारे शांडिल्य सूत्रों कहे छे - "भक्ति एटले भगवान प्रत्ये अपूर्व अनुराग"

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

* 'भक्ति' नुं तात्पर्य अने 'पुष्टिभक्तिमार्ग' (५) *

****

'रति' ए मनुष्य नी मुलभूत वृत्ति नु नाम छे. रति ना उच्च स्वरुपने 'प्रेम' कहेवाय छे, अने प्रेम नु उच्च स्वरूप ते 'भक्ति'. अर्थात 'भक्ति' ए प्रेम नु ज बीजु नाम छे. प्रेम हमेशा उत्कट होय छे, पण ज्यारे ते अति उत्कट बने छे, त्यारे ते भक्ति मा परिणाम पामे छे. सामान्यतः प्रेम अने भक्ति ए बे शब्दो एकबीजा ना पर्याय तरीके वपराता होय छे, छता 'प्रेम' शब्द मानवीय प्रेम माटे अने 'भक्ति' शब्द प्रभु प्रेम माटे विशेष प्रमाण मा वपराय छे.

भक्ति अथवा प्रभुप्रेम दरेक मनुष्य ना हृदय मा बीज रुपे रहेल होय छे. ते एक सहज वृत्ति छे. ते कोईमा सुषुप्त अवस्था मा, कोइमा अंकुरावस्था मा, कोइमा प्रफुल्लावस्था मा, तो कोइमा उन्मत्त

अवस्थामा देखाती होय छे. तेनेज श्रीकहाप्रभुजी प्रेम - आसक्ति - व्यसन एम उत्तरोत्तर थती दशा कहे छे. भक्ति रुपे ते शुद्ध स्वरूपे खिली उठे छे.

परमात्माना अंश रुपे मानवी नु अस्तित्व छे. तेथी सहजरूपे ते परम तत्त्व तरफ आकरषाय छे. आ एक स्वाभाविक प्रक्रिया छे. श्रीमहाप्रभुजी निबंध (प्रकाश) मा कहें छे -"स्नेह ए भक्ति छे. देवादि संबंधी जे रति अथवा प्रीति एनेज भाव कहे छे. रति एटले स्नेह. देवत्व एटले माहात्म्य. ए बन्ने भक्तीना अंग छे". शांडिल्य सूत्र मा पण कह्यु छे, - "सापरानुराक्तिरीश्वरे". आम तेमा पण परम निरूपाधिक स्नेह ने भक्ति कही छे.

नारद पंचरात्रमा अने तदनुसार श्रीमहाप्रभुजीए पण शास्त्रार्थ प्रकरण - निबंधमा भक्ति नी व्याख्या करता कह्यु छे - "माहात्म्य ज्ञानपूर्वक सुद्दढ़ अने सर्वतोधिक भगवान् मा स्नेह, तेने भक्ति कहेवाय". भगवानने आत्मतत्त्वथी जाणवा थी एमनामा प्रेम थाय छे. आम 'भगवाननु माहत्म्यज्ञान' अने 'तेमना मा कदी न डगे तेवो अन्य सर्व थी विशेष स्नेह' ए बे भक्ति ना आवशयक अंग छे.

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

* 'भक्ति' नुं तात्पर्य अने 'पुष्टिभक्तिमार्ग' (६) *

****

मनुष्यनी कोइपण प्रवृत्ति प्रयोजन विनानी होती नथी. प्रत्येक प्रवृत्ति नो कांईक हेतु होय छे. प्रयोजन माटे शास्त्रोए "पुरुषार्थ" शब्द वापर्यो छे. 'पुरुष' एटले जीवात्मा, जे देह रूपी 'पुर' मा रहेलो छे ते. तेनी केटलिक आकांक्षाओं होय छे, तेने सांसारिक स्थितिमा जे प्रयोजन सिद्ध करवाओ होय छे, तेने "पुरुषार्थ" कहे छे. शास्त्रोमा धर्म, अर्थ, काम अने मोक्ष एम चार पूरुषार्थ बताववामा आव्या छे. भागवत ना बीजा अध्यायमा आ पुरुषाथोना हेतु नु वर्णन करवामा आव्यू छे.

प्राणी - मनुष्य मात्र मां सुख मेलाववानी सहज वृत्ति होय छे. ते सुख नी कामना ने "काम" पुरुषार्थ कह्यो छे. तेने प्राप्त करवा माटे "अर्थ" नी एटलेके वित्त आदि साधननी आवश्यकता होय छे. आ 'अर्थ' अने 'काम' बन्ने पुरूषार्थो धर्मयुक्त होवा जोइए, जेनाथी अंतिम पूरुषार्थ "मोक्ष" सिद्ध थई शके. माटे "धर्म" पूरुषार्थ नी महत्ता छे. आम का चार पुरुषार्थोमा जेम 'अर्थ' ए 'काम' नु साधन छे, तेम 'धर्म' ए 'मोक्ष' नु साधन छे. ए रीते आ चारेय पुरूषार्थो संकलायेला छे. परंतु अंतिम लक्ष्य 'मोक्ष' प्राप्त करवानो छे.

श्रीवल्लभाचार्यजी सुबोधिनिजी (१.१.२) मां कहे छे के धर्म अने ज्ञान ए बे साधन छे, ज्यारे प्रभुनु प्रकट थवु 'साध्य' छे अने भगवाननो साक्षात्कार थवो ते 'फल'छे. धर्म ए जीवन ने धारण करनार होवाथी धर्म वगर नु जीवन होइ शके नहीं. श्रीवल्लभचार्यजीनु मंतव्य छे (सु.१.!६.१६) के कोइपण धर्म स्वार्थ वश करायेलो होवो जोइए नहीं, परंतु भगवद बुद्धिथी प्रेरित होवो जोइए. जे धर्म कोई लौकिक इच्छाथी करवामां आवे, एटलेके पैसा, पुत्रादि, कीर्ति के सत्ता प्राप्त करवा माटे करातो होय तो ते 'धर्म' न कहेवाय, परंतु धर्मनो आभास मात्र होय छे, ते अधर्म नी ज शाखा छे. धर्म 'नीति विरोधी' होइ शके नही. साचा धर्मनु आचरण करवाथी चित्तनी प्रसन्नता अनुभवाय छे, अने ते प्राप्त थता लोकेषणा, वित्तेषणा के सत्ता नी लालसा दूर थाय छे. धर्म नु मुख्य फल भगवान् नी प्रसन्नता छे.

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

* 'भक्ति' नुं तात्पर्य अने 'पुष्टिभक्तिमार्ग' (७) *

****

मनुष्य पोताना जीवन मा बे वस्तुओनी इच्छा राखे छे. (१) दु:ख हानि , अने (२) सुखनी प्राप्ति. श्रीवल्लभाचार्यजी सुबोधिनिजी मां कहे छे के आ बन्ने सस्तु मनुष्य ना प्रयास थी नहीं, प्रभु नी कृपाथी प्राप्त थई शके छे. ए हकीकत छे के प्रत्येक मनुष्य 'आनंद' मेळववा नी इच्छा राखे छे अने ते माटे प्रयत्न करे छे. शास्त्रो ए तेनेज धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष ए चार पुरूषार्थो रुपे बताव्या छे, कारणके तेआनंद रुपी पूरुषार्थ ना ज ते बधा पासा छे. 'काम' थी आनंद मेळववानु ज प्रयोजन होय छे, जेने माटे ते 'अर्थ' पूरुषार्थ करे छे. 'मोक्ष' पण आनंद नुज एक स्वरूप छे, जेने माटे 'धर्म' पुरुषार्थ बताव्यो छे. एटले के वस्तुतः जीवन नो परम ओरुषार्थ तो 'आनंद' ज छे.

मनुष्य स्वप्रयत्ने आनंद मेळववा मथे छे, जे ते स्त्रीसुख, पुत्रप्राप्ति, वित्तर्जन, कीर्तिनी प्राप्ति वगेरे मा शोधे छे. पण ते बधु सुख मृगजल समान होय छे. ते मनुष्य ने छेतरे छे अने अंते दु:ख माज परिणमे छे.

भारतीय दर्शनोमां 'बंधन अने मुक्ति' विशे चिंतन करवामां आव्यू छे. लगभग बधी दार्शनिक विचारधाराऔं मां 'मुक्ति' एटले 'मोक्ष' विशे विचार करवामां आव्यो छे, अने तेने प्राप्त करवाना उपाय सूचव्या छे.

मनुष्यना कर्म ज तेने बंधन रूप बने छे, अने सत्कर्म तेमज दुष्कर्म बन्ने ना सारा-खोटा फल भोगववा माटे अनेक योनियो मां जन्म-मरण ना चकरावा मां जीवात्माने फर्या करवुं पड़े छे, जेना कारणे सुख-दु:ख नो अनुभव करवो पडतो होय छे. तेथी शास्त्रोमा बतावेला पुरूषार्थो नो हेतु मात्र दु:ख नी निवृत्ति ज नथी परंतु शास्वत आनंदनी प्राप्ति छे. तदर्थ 'मोक्ष' ने अंतिम पुरूषार्थ कह्यो छे.

जो के दिव्य आनंद नी अनुभूति रूप मोक्ष ना स्वरूप ने जुदी जुदी विचारधाराओए पोतपोताना आध्यात्मिक द्रष्टिकोण थी भिन्न भिन्न प्रकारे समजाव्यू छे, परंतु वेदान्त नी परिभाषा मां ज्ञानवादी दृष्टिकोण थी जीवात्मा पोते ज परमात्मा होवानु ज्ञान थवु - "अहं ब्रह्मास्मि" नी अनुभूति ने 'मोक्ष' नी स्थिति बतावी छे. ज्यारे श्रीवल्लभाचार्यजी स्वयं "पुरुषोत्तम" नी प्राप्ति , श्रीकृष्ण नी दिव्य लीलाओ ना प्रत्यक्ष अनुभव ने 'मोक्ष' कहे छे, जे भगवान नी निर्गुण भक्ति नी फलश्रुति छे.

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

* 'भक्ति' नुं तात्पर्य अने 'पुष्टिभक्तिमार्ग' (८) *

****

सांसारिक बंधनोमां थी मुक्त थवाना उपायो नो विचार करतां पहेलां 'मुक्ति' अथवा 'मोक्ष' ना स्वरुपने तेमज तेने प्राप्त करवाना शास्त्रोए बतावेला मार्गो विशे जाणवू जरुरी गणाय, विशेष करीने श्रीवल्लभाचार्यजीना दृष्टिकोणथी, कारणके तेमणे भगवद प्राप्ति ना लक्ष ने केन्द्रमा राखीने जे विशेष हेतुथी 'पुष्टिभक्तिमार्ग' ने प्रस्थापित - प्रवर्तित कर्यो छे, अने तदन्तर्गत 'भक्ति' ना एक विशेष स्वरुपने

समाजाव्यू छे, ए पूर्वभूमिका जो आपणे समजीए तो जे 'भक्ति पूरुषार्थ' नो श्रीवल्लभाचार्यजीए निर्देश कर्यो छे तेनु यथार्थ रुपे अनुसरण करीने आपणे आपणा अंतिम लक्ष्य ने प्राप्त करी शकिए अने आपणो पूरुषार्थ निरर्थक न जाय !.

वेदादि शास्त्रो - उपनिषदो, स्मृतिओ, आगमो, तेमज पुराणों मां जीवन ना उत्कर्ष माटे मुख्यत्वे त्रण मार्गोनो निर्देश करवामा आव्यो छे. ते छे - कर्ममार्ग, ज्ञानमार्ग अने भक्तिमार्ग. भगवाने गीतामा आ त्रणेय मार्ग विशे उपदेश आप्यो छे अने तेनु तारतम्य समजाव्यू छे.

वेद ना पूर्वकाण्ड मां विभिन्न यज्ञ - यागादि तेमज विधी - निषेध नो निर्देश करवामां आव्यो छे. तेमां नित्य, नैमित्तीक , काम्य कर्म, इत्यादि नी विस्तारथी चर्चा करवामां आवेल छे. कर्म ना सिद्धांत प्रमाणे कोई कर्म करवामा आवे त्यारे तेनी फल आपवा नी क्षमता उत्पन्न थाय छे जेने 'अपूर्व' कहेवाय छे. ते ज्यां सुधी अपेक्षित फल भोगवाई न जाय त्यां सुधी रहे छे. कर्मो नी असर सत्कर्म अथवा दुष्कर्म नु फल भोगववामा परिणमित थाय छे. ज्यारे सारा खोटा बन्ने प्रकारना कर्मोना फल संपूर्णपणे भोगवाई जाय अने ते पछी कोई प्रकार ना काम्य-कर्म न करवामां आवे, एटले कोई हेतुसर कर्म करवामा न आवे तो तेमज शास्त्र आज्ञा मुजब कर्तव्य तरीके निर्दिष्ट नित्य कर्म चालु रहे तो मोक्षनी प्राप्ति थाय छे. तेम छतां 'कर्म' नी उपयोगिता विशे विभिन्न विचारधाराओ नो दृष्टिकोण भिन्न भिन्न छे.

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

* 'भक्ति' नुं तात्पर्य अने 'पुष्टिभक्तिमार्ग' (९) *

****

वेद संमत 'सांख्य' तथा न्याय-वैशेषिक दर्शनों कर्म भावना नो तीव्र विरोध करे छे. सांख्य मत प्रमाणे प्रकृतिथी पुरुष नो विवेक करनारुं ज्ञान प्राप्त थाय तो कर्मनी जरुरत नथी. तमाम प्रकारना कर्मो वासनामां थी उत्पन्न थाय छे, अने ए वासनाओ सूक्ष्म देह धारण करे छे. तेना आधारे स्थुल देह नो त्याग करनार जीवात्मा नवो देह धारण करे छे. संसारमां जन्म लेवो तेज दुःख नु कारण छे. देह धारण करीने पूनः जुदा जुदा कर्मो करवा पड़े छे. 'मुक्ति' मेलववा माटे आ कर्मनी जालने छेदी नांखवी जरुरी होय छे.

'योग दर्शन' चित्तवृत्तिना निरोध नो उपदेश आपे छे. 'न्याय' तथा 'वैषेशिक' दर्शनों बुद्धि जन्य ज्ञान द्वारा सुख- दुःख ना प्रश्नो उकेलवानी सलाह आपे छे. आ चारेय दर्शनों 'कर्ममार्ग' ने अनुमोदन आपता नथी. 'पूर्व मीमांसा' ना रचयिता जैमिनी ऋषिए कर्म नी प्राधान्यता बतावी छे. तेमना मतानुसार कर्म एज ईश्वर छे, अने तेज फलनी प्राप्ति करावे छे. परंतु श्रीवल्लभाचार्यजी अणुभाष्य मां समजावे छे के कर्म तो जाते ज जड़ छे. कर्म ना नियामक अने फल आपनारा भगवान् छे.

ज्ञानवादी शंकराचार्यजी कर्म ने आत्मज्ञान थी विपरीत माने छे, विशेषतः ज्यारे ते कोई अपेक्षित फल माटे करवामा आवतू होय. त्यारे ते आत्म साक्षात्कार मा बाधारूप बनी शके छे, कारणके तेमना मते आत्माना स्वरूप नूं साचु ज्ञान ज मोक्ष नु कारण छे.

केटलाक आचार्योना मते ज्ञानीने पण कर्म करवानी जरुरत होय छे. तेम कर्म करनारने पण ज्ञान नी जरूर होय छे. ज्ञान वगर कर्म तेमज कर्म वगर नूं ज्ञान ध्येय प्राप्ति करावी शकतु नथी. गीता मां पण एवो बोध आपवामां आव्यो छे के मनुष्यनी वाणी, मन के इंद्रियों तथा बुद्धिथी जे कर्म करवामां आवे छे,

ते प्रभु प्रीत्यर्थे ज होवा जोइए, स्वभोग माटे नहीं. भगवान कहे छे के यज्ञकर्म नी जरूरियात स्वर्ग नी तुच्छ कामना माटे नथी, तेमज आत्मसुख माटे पण नथी, परंतु भगवान नी प्रसन्नता माटे छे (३/१३).

ए अर्थमा श्रीवल्लभाचार्यजी पण यज्ञ नी भावना नो स्वीकार करे छे. तेओ सुबोधिनिजी (१०.१७.४१) मा जणावे छे के "कामनाथी करवामा आवेल यज्ञ आधिभौतिक छे, चित्तनी शुद्धि माटे करवामां आवेल यज्ञ आध्यात्मिक छे, ज्यारे भगवान माटे यज्ञ करवामां आवे ते आधिदैविक यज्ञ कहेवाय, जे उत्तम छे.

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

* 'भक्ति' नुं तात्पर्य अने 'पुष्टिभक्तिमार्ग' (१०) *

****

श्रीवल्लभाचार्यजीए सुबोधिनिजीमा अनेक स्थाने कर्मनी आवश्यकता शाने माटे छे ते समाजाव्यू छे. तेओ वैदिक कर्मो नो स्वीकार करतां कहे छे के "जेम आयुर्वेद शारीरिक रोग दूर करवा माटे उपयोगी छे, तेम वैदिक कर्मो सांसारिक रोगोने दूर करे छे. (सु.३१.३.३४). जेवीरीते खेतरमां वावेलु बीज जेवा प्रकारनु होय, तेवु फल मले,, तेम कर्म जेवा प्रकारनु करवा मां आवे तेवु तेनु फल प्राप्त थाय छे. (सु.१.३.७). तेओ समजावे छे के कर्मोने विष जेवा मानवा पण जेम विषने अन्य द्रव्योनी भावना आपवामां आवे तो भयंकर रोग मटाडे छे, तेम ज्ञान आने भक्तिनी भावना थी कर्मो करवामां आवे, अर्थात प्रभुनी प्रसन्नता माटे कारवा मां आवे तो सारू फल प्राप्त थाय छे. जो नजीवा सुखनी इच्छा थी कर्म करवामां आवे तो कर्म दुःख आपे छे, पण तेनो भगवान साथे सम्बन्ध जोडवाथी ते सुखरूप बने छे. (सु.३.८.२०).

गीता मां पण भगवाने 'कर्म' नूं तत्त्वाज्ञान समजाव्यु छे. तेमां फलनी आशा विना कर्म करवानो उपदेश उपायो छे. कर्मनु फल भगवान् आपे छे. (२/४७). आवोज खुलासो श्रीमहाप्रभुजीए अणुभाष्य (३.२.३८) मा पण कर्यो छे, फल तो भगवान ज आपे छे. प्रत्येक मनुषये कर्म करवाना ज होय छे, जो ते स्वयं करवानी ईच्छा न करे तो प्रकृति तेनी पासे करावे छे (३/५). मनुष्ये कर्म पोतानी स्वेच्छा मुजब न करता शास्त्र आज्ञा प्रमाणे करवा जोइए (१६/२४). गीता समजावे छे के "हुं कर्ता छुं" एवी बुद्धि राखीने कोई कर्म न करवु जोइए, परंतु ईश्वर कर्म ना प्रेरक छे, तेम जाणवू जोइए.

श्रीवल्लभाचार्यजीए भागवत अने गीता ना आधारे 'निष्काम कर्म' नो उपदेश आप्यो छे. भगवान परत्वे करवामां आवेला कर्म पापनाशक बने छे, तेमज चित्त तथा अंतःकरण नी शुद्धि करे छे, जेना कारणे ते ज्ञान अने भक्ति माटे सहायक बने छे. कारणके "पुरुषोत्तम" नी प्राप्ति माटे तो 'भक्ति' ज मात्र साधन छे. तेओ स्पष्टतया कहे छे के यज्ञ, दान, तपः, योग इत्यादि स्वयं प्रभुनी प्राप्ति करावी शकता नथी, परंतु ते भक्ति ना अंगभूत छे, अर्थात तेमना मते कर्म नी आवश्यक्ता अंतःकरण नी शुद्धि माटे छे.

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

* 'भक्ति' नुं तात्पर्य अने 'पुष्टिभक्तिमार्ग' (११) *

****

शास्रोमां भगवद साक्षात्कारनो बीजो मार्ग 'ज्ञानमार्ग' बताव्यो छे. ज्ञान मात्र इन्द्रियजन्य के बुद्धिजन्य

ज नहीं, परंतु शास्त्र द्वारा मेलवेलु ज्ञान कह्यु छे. शंकराचार्यजी ब्रह्म ने 'ज्ञान - स्वरूप' बतावे छे. तेथी ब्रह्मज्ञान प्राप्त थवाथी "अहं ब्रह्मास्मि" नो अनुभव थाय छे, तेम समजावे छे. ब्रह्मविद्या प्राप्त करवा माटे 'साधन चतुष्ट्य' - वैराग्य, नित्य-अनित्य वस्तु नो विवेक, तप: अने मुमुक्षता आवश्यक छे. तेओ श्रुति वचन "तत्वमसि" ने महावाक्य गणी जीव वास्तव मा ब्रह्म ज छे, तेम प्रतिपादन करे छे. अर्थात जो आत्मा ज परमात्मा छे तेवुं ज्ञान थाय तो ब्रह्मानुभव थई शके तेम शंकराचार्यजी नो मत छे. तेने माटे तेओ वेद, गीता अने ब्रह्मसूत्र -प्रस्थानत्रयी ने माध्यम गणावे छे. ज्यारे 'आत्मा' नु यथार्य ज्ञान थाय के ते पोतेज ब्रह्म छे, तेवो अहेसासज मुक्ति छे.

ज्ञानमार्ग नूं अंतिम फल मोक्ष के अक्षरब्रह्म नी प्राप्ति छे, पुरुषोत्तम नी प्राप्ति नथी, जे भक्तिमार्ग थी प्राप्य छे. श्रीवल्लभाचार्यजीना मते 'वैदिक ज्ञानमार्ग' मां ज्ञान नो विषय 'अक्षरब्रह्म' छे. तेना विशेष ज्ञान थी अविद्या नो नाश थतां गणितानंद नी प्राप्ति अथवा स्वरूप लाभ थाय छे जेने 'ब्रह्मानंद' कह्यो छे. ते ज्ञानमार्ग नुं उच्चत्तम फल छे. मर्यादामार्गीय माटे "अक्षर" नु ज्ञान ब्रह्मभाव नूं कारण छे, जे पुरुषोत्तम साथै 'अविनाभाव'-अभिन्नता नी पूर्वावस्था छे.

हकीकत मां शंकराचार्यजी द्वारा प्रवर्तित ज्ञानमार्ग मुजब अविद्याना नाश थी आत्मा (स्व) नी ओळख थाय छे, ब्रह्मना ज्ञान नो निर्देश नथी. शांकर मत प्रमाणे प्रारब्ध कर्मो, जेनु कारण अविद्या छे, तेनो नाश थतो नथी, तेथी ज्ञान द्वारा अविद्या नु दमन थाय छे, तेनो संपूर्ण नाश थतो नथी. (K.Narayan).

भगवाने गीता मा पण पोतानी प्राप्ति माटे ज्ञान अने ज्ञानयोग नो महिमा समजाव्यों छे. तेम छतां, कर्ममार्ग अने ज्ञानमार्ग सर्वने माटे सुलभ नथी. आनो निर्देश आगल कह्यु तेम श्रीवल्लभाचार्यजी ना पोताना शिष्यने आपेला उत्तर मा मले छे के "जेना मन मां जे मार्ग दृढ थाय, जे मार्ग मां विश्वास होय एज मार्ग मोटो, परंतु, मोटो भक्तिमार्ग छे, जेमां जीव कृतार्थ थाय छे, अने ज्ञानमार्ग तथा कर्ममार्ग मां कठिनाई थी कृतार्थ थवाय छे.

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

* 'भक्ति' नुं तात्पर्य अने 'पुष्टिभक्तिमार्ग' (१२) *

****

मोक्ष अथवा भगवद साक्षात्कार नो त्रिजो मार्ग शास्त्रोए "भक्तिमार्ग" बताव्यो छे. जेवी रीते 'कर्म भावना' आने 'ज्ञान भावना' अनुक्रमे वेदना पूर्वकाण्ड अने ज्ञानकाण्ड मा थी प्राप्त थाय छे, तेम वेद नी संहिताओं मा विभिन्न देवोने उद्देशीने लखायेला सूक्तों मां 'भक्ति तत्त्व'नो निर्देश मले छे. तेना मंत्रद्रष्टा ऋषिओए करेली स्तुति अने प्रार्थना तेमां जोवा मले छे, जे भक्तीना अंगरूप छे. तेमां ऋषिओए देव नुं महत्त्व दर्शावी 'वंदन' कर्या छे, तो क्यांक 'दास्य भाव' के 'सख्य भाव' व्यक्त जारवा मा आव्यो छे.

ऋग्वेद ना ऋषि कहे छे के "सर्वत्र परमात्मा ने चाहनारी मारी वृत्तियो जेम गाय पोतांना समूह पाछल जाय छे, तेम जाय छे". अन्यत्र कहे छे -हे समर्थ प्रभु, जेवीरीते पोताने चाहनार पतिने तेने चाहती पत्नी स्पर्श करे छे, तेमज मारी वृत्तियो तने स्पर्श करे छे". आ वचनो मा 'प्रेममलक्षणा भक्ति' नो निर्देश मेल छे.

मुंडक उपनिषद् मा जीवात्मा अने परमात्मा नो संबंध सख्यभावे दर्शाववामां आव्यो छे. आथी एम्

कही शकाय के भक्ति नी संकल्पना वेदकालीन छे. छान्दोग्य उपनिषद मां याज्ञवल्क अने गार्गी ना संवाद मां जनाववा मां आव्यू छे के "दुनिया ना कोईपण प्रेमविषयो स्वतंत्रपणे सुख आपी शकता नथी, पण ए परमात्मा ना प्रेम स्वरूपो छे, एम् समाजवु जोइए".

वैदिक साहित्य पछी महाभारत मा 'नारायण पर्व' मां नारद अने नारायण वच्चे संवाद छे, जेमां 'भक्ति' ने मुख्य साधन मानबमवा आव्यू छे.गीता जे महाभारत नो ज विभाग छे, तेमां विशेष रीते भक्ति नुं ज माहात्म्य समजाववामां आव्यू छे. तेमां कर्म आने ज्ञान ने साधनों बताव्या छे, छतां तेने भक्तु ना मुख्य अंग कह्या छे. तेनो समग्र बारमो अध्याय ज 'भक्तियोग' तरीके निरूपित छे, अने छेल्लो अढारमा अध्याय मा आत्मनिवेदन अने शरणागति नो उपदेश भगवाने आपेलो छे. ते 'आत्मनिवेदन भक्ति' नो निर्देश करे छे.

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

∗ 'भक्ति' नुं तात्पर्य अने 'पुष्टिभक्तिमार्ग' (१३) ∗

****

शंकराचार्यजीनी ज्ञानवादी विचारधारा थी विपरीत नवमी शताब्दीथी समग्र भारत मा विविध 'भक्ति संप्रदायों' अस्तित्व मां आव्या छे, जेमणे मोक्ष प्राप्ति अथवा भगवद साक्षात्कार माटे "भक्ति" नी मुख्यता ने प्रतिपादित करी छे. नवमी शताब्दिमां नाथमुनि द्वारा दक्षिण भारत मां 'आलवार संतो' मां कृष्णभक्ति नो व्यापक प्रचार थयेल हतो. तेमनी विविध रचनाओ मा भक्तिनी अद्भुत जांखि थाय छे. तेज समय दरम्यान उत्तरभारत मां पण अनेक स्थानोमा भक्ति संप्रदाय नो प्रचार एवं अनेकविध प्रसार थयो हतो.

नाथमुनि पछी तेमना पौत्र यामुनाचार्ये तेमज तेमना उत्तराधिकारी रामनुजाचार्ये भक्तिमार्ग नो विस्तार कर्यो हतो. तेथी तेओ भक्ति संप्रदाय ना मुख्य प्रतिपादक तरीके मनाय छे. तेमणे शंकराचार्यजीना मायावाद ना सिद्धान्त नु खंडन करी "विशिष्टाद्वैतवाद" प्रतिपादित कर्यो छे. तेमना मते भगवान भक्तो ऊपर अनुग्रह करवा तेमनी सामे पांच रूपे प्रकट थाय छे : "अर्चा", जे मूर्ति स्वरूपे मंदिरोंमां, घरों मां स्थापित करवामां आवे छे, "विभव" जे विविध अवतारो ना रुपे प्रकट थाय छे, "व्यूह", जे भगवान ना चार व्यूह -वासुदेव, संकर्षण, प्रद्युम्न अने अनिरुद्ध छे, "सूक्ष्म" अर्थात नारायण स्वरूप, अने "अंतर्यामी", जो प्रत्येक जीवात्मा मां स्थित प्रेरक तत्त्व छे. तेओ सृष्टिनी भगवान नी लीला माने छे.

रामानुजाचार्ये स्थापेला "श्री संप्रदाय" सहित तेमना अनुगामी आचार्यो द्वारा कुल चार "भक्ति संप्रदायों" अस्तित्व मां आव्या छे. "श्री संप्रदाय" उपरान्त मध्वाचार्य द्वारा "ब्रह्म संप्रदाय", निम्बार्काचार्य द्वारा "सनक संप्रदाय" अने तेरमी शताब्दी मां विष्णुस्वामी द्वारा "रूद्र संप्रदाय". आ चारेय संप्रदायों मां विशेषतः कृष्णभक्ति नु प्राधान्य रहेलु छे. विष्णुस्वामी ना रुद्रसंप्रदाय नी परंपरा मां पंदरमी शताब्दी मां आचार्य श्री वल्लभे भक्ति ने विशेष ऊँचाईए पहोचाड़ी "प्रेमलक्षणा भक्ति" नु विशिष्ट स्वरूप समजावी "पुष्टि संप्रदाय" प्रगट कर्यो / प्रवर्तित कर्यो छे. तेमां पूर्वे प्रचलित वेद विहित 'मर्यादा भक्ति' थी विलक्षण 'पुष्टि भक्ति' नी आगवी ओळख छे. पुष्टि संप्रदाय ने "वल्लभ संप्रदाय" पण कहेवाय छे.

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

* 'भक्ति' नुं तात्पर्य अने 'पुष्टिभक्तिमार्ग' (१४) *

****

उपरोक्त चारेय भक्ति सप्रदायोनी दार्शनिक विचारधाराओं मां क्यांक भेद अने क्यांक समानता रहेली छे. परंतु ते सर्वे नी साधना प्रणाली श्रीकृष्ण ना कोइक स्वरूप नी 'भक्ति' छे.

रामानुजाचार्य नो मत 'विशिष्टाद्वैत वाद' कहेवाय छे जे ब्रह्मने सृष्टिकर्ता, कर्मफलदाता, नियंता अने अंतर्यामी माने छे. तेओ जीव अने जगतं ने ब्रह्म नु शरीर बतावे छे, अने तेमनी वच्चे एक विशिष्ट प्रकार नो अद्वैत संबंध छे, तेम प्रतिपादन करे छे. तेमणे मुक्तिना श्रेष्ठ साधन तरीके भगवाननी शरणागति स्वीकारी उपासनात्मक भक्ति बतावी छे, जेना द्वारा जीव प्रभुनी प्राप्त करी शके छे. तेमना ग्रंथोमां 'श्रीपति' - लक्ष्मीपति विष्णु, 'नारायण ना नामनो उल्लेख जोवा मले छे. तेमणे शूद्रोने पण भक्तिना अधिकारी गण्या छे. तेओ कर्म अने ज्ञान ने भक्ति ना पूरक मान्या छे अने प्रभुनी कृपा प्रयत्न द्वारा प्राप्त थाय छे. दक्षिण भारतमा भक्ति आंदोलन ने वेग आपवामां तेमनु विशिष्ट योगदान छे.

तेमना थी अलग बारमी शताब्दी मां मध्वाचार्ये 'द्वैतवाद' नी विचारधारा प्रस्तुत करी जीव, जगत अने ब्रह्म वच्चे पांच प्रकारे तात्विक भेद बताव्या छे. तेओ ईश्वरने सर्वथा विलक्षण, अपरिमित, सर्वज्ञ, अनंत शक्ति माने छे. तेमना मते जीव भगवान नो अनुचर छे तेथी तेमां स्वतः कार्य करवानी क्षमता होती नथी. तेओ वास्तविक सुखानुभूतिने 'मुक्ति' माने छे, जेना सायुज्यादि चार प्रकार छे. मुक्ति ना श्रेष्ठ उपाय तरीके तेमणे 'अनन्या भक्ति' नो उपदेश आप्यो छे.

ए श्रेणिमा त्रिजा आचार्य निम्बार्काचार्य थई गया जेमणे 'द्वैताद्वैत वाद' नु प्रतिपादंन कर्यु छे. तेओ ब्रह्म अने जीव नो संबंध व्यवहार दशामां 'द्वैत' अर्थात भिन्न, परंतु परमार्थ दशा मां 'अद्वैत' माने छे. तेमना मते ईश्वर सगुण, निर्दोष छे, जेमने तेओ परब्रह्म, नारायण, भगवान, कृष्ण, पुरुषोत्तम आदि नामो थी संबोधे छे. तेमना मते भगवान कृष्ण परब्रह्म छे अने जीव प्रपत्ति द्वारा भगवान ना अनुग्रह नो अधिकारी बने छे. तेना कारणे तेनामां भक्ति नो उदय थाय छे, जेनाथी तेने भगवान ना साक्षात्कार नी सिद्धि प्राप्त थाय छे. आ संप्रदाय मा राधा ने भगवान कृष्ण नी आल्हादिनी शक्ति - सर्वेश्वरी मानी तेमनी पण उपासना करवामां आवे छे.

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

* 'भक्ति' नुं तात्पर्य अने 'पुष्टिभक्तिमार्ग' (१५) *

****

चौथो भक्ति संप्रदाय - 'विष्णुस्वामी द्वारा स्थापित 'रूद्र संप्रदाय' छे, जेमनी परम्परामा 'वल्लभ संप्रदाय' अथवा 'पुष्टि संप्रदाय' प्रचलित थयेल होवानु मनाय छे. विष्णुस्वामी रचित एक मात्र प्राप्त ग्रंथ 'सर्वज्ञ सूक्त' मां ईश्वरने सच्चिदानंद स्वरूप बताव्यू छे जे पोतानी आल्हादिनी शक्तिथी आश्लिष्ट छे. तेमां मायाने ईश्वरने आधीन अने जीव ने अविद्या द्वारा आच्छादित बताव्या छे. तेना कारणे जीवने दु:ख भोगववु पड़े छे. तेमना द्वारा स्वीकृत 'अद्वैत' माया रहित होइ 'शुद्धाद्वैत' होवानु मनाय छे. तेओ कृष्णउपासक

हता अने कृष्ण ने जगतनुं मूल सत्य तथा परात्पर ब्रह्म रुपे स्वीकारतां हतां तथा भक्तिने ईश्वर प्राप्तिनुं सर्वोत्कृष्ट साधन रुपे स्वीकारता होवानुं कहेवाय छे.

आम छतां अलग अलग कालमां चार विष्णुस्वामी थयेला होवाथी कोना द्वारा 'रूद्र संप्रदाय' स्थापवामां आव्यो हतो, अने ए नामनी सार्थकता शुं , ते विशे अनिश्चितता प्रवर्ते छे. परंतु श्रीयदुनाथजी विरचित 'वल्लभ दिग्विजय' ग्रन्थ मा विष्णुस्वामी संप्रदाय ना नामनो उल्लेख मले छे, जेमां तेओ दक्षिण ना राजा विजय ना राजगुरु देवस्वामीना पुत्र होवा नु बताव्यू छे. तेमना देवदर्शन, श्रीकंठ आदि अनेक शिष्यो द्वारा तेमना संप्रदाय नो प्रचार करवामां आव्यो हतो, परंतु बौद्धो द्वारा तेमना मंदिरो तथा ग्रंथो नो नाश करवामां आवेल होवाथी अन्य प्रमाण उपलब्ध नथी.

वास्तवमां आपणे श्रीवल्लभाचर्यजी द्वारा भक्ति ना जे स्वरूप ने समाजवा कोशिश करी रह्या छीए तेना मूल प्राचीन भक्ति संप्रदाय नी परंपरा मां प्रतिपादित थयेल छे, तेम स्वीकारवा नोज आशय छे. कर्म, ज्ञान अने भक्ति ना विविध मार्गो मां भक्ति नी विशेषता समाजवा माटे ज विभिन्न भक्ति संप्रदायों नी विविध दार्शनिक विचारधाराओ नु संक्षिप्त अवलोकन करवानो आशय रहेलो छे, जेथी भक्ति ना यथार्थ स्वरुप ने जाणी शकाय अने जेने श्रीवल्लभाचार्यजीए परम फल रूपा बतावी छे, तेनु हार्द समजी शकाय.

उपरोक्त तात्विक चर्चा नी पृष्टभुमिमां जो आपणे भक्तिना तात्पर्य ने समजी शकिए तो महाप्रभु श्रीवल्लभाचर्यजी द्वारा स्थापायेला 'पुष्टिभक्तिमार्ग' ने अनुसरवामां आपणी निष्ठा दृढ बनी शके.

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

* 'भक्ति' नुं तात्पर्य अने 'पुष्टिभक्तिमार्ग' (१६) *

****

उपरोक्त भक्ति संप्रदायो उपरान्त पण केेटलाक अन्य संप्रदायों प्राचीन समय थी अस्तित्व मां आवेला छे, जेवाके राधावल्लभ संप्रदाय, चैतन्य समप्रदाय, हरिदासी संप्रदाय वगेरे, जेमां मुख्यत्वे कृष्ण ना स्वरूप अथवा राधाकृष्ण ना विग्रह नी उपासना करवांनी पद्धतियो अपनाववामां आवी छे.

रामानुज संप्रदाय मां लक्ष्मीपति विष्णु के नारायण ने उपास्य देव मानवा मा आवे छे, जेमनी आराधना दास्य भावथी तेमना शरणागत थईने करवामा आवती होय छे. तेमां पांचरात्र सिद्धान्त मुजब विविध प्रकारे पूजा विधि निर्धारित करवामा आवी होय छे. दक्षिणमा थई गयेल आलवार भक्तोमां माधुर्य भाव नी प्राधान्यता पण जोवा मले छे.

माध्व संप्रदायमा भागवत पुराण ना आधारे पूर्णतः पूजा पद्धति स्वीकारवामा आवीं छे, अने तदनुसार कृष्ण भक्ति करवा मां आवे छे. तेमनामां पण समर्पण अने शरणागति ना भाव नी विशेषता छे. निम्बार्क संप्रदायमां राधाकृष्ण ना युगल स्वरूप नी उपासना करवानु विधान छे, जेमां राधा सहित कृष्ण नी पूजा - अर्चना तेमज तेमनु ध्यान इत्यादि करवा मा आवे छे.

राधावल्लभ संप्रदाय मा कृष्ण नीआराधना तथा प्रेमस्वरूपा राधा नी प्रधानता छे, जेनी पूजा कृष्ण नी साथे करावामां आवे छे. तेमां भक्तिरस नी विशेषता जोवा मले छे. चैतन्य संप्रदाय मुजब श्रीकृष्ण ज अनंत शक्तियुक्त अनादि परम तत्त्व होवाथी राधाकृष्ण नी दिव्य लीलाओ ना आस्वादन दास्य, सख्य, वात्सल्य तथा माधुर्य भावथी करवामा आवे छे. आ संप्रदाय मां नाम- संकीर्तन ने विशेष महत्त्व आपवामां

आव्यू छे, जेमां जयदेव आदि कवियो ना कीर्तनों गावा मा आवे छे. आ संप्रदाय ना अधिष्ठाता सनातन गोस्वामी छे, जेमणे निर्धारित करेला नियमानुसार आ संप्रदाय ना मंदिरों मा अर्चा-पूजा करवामां आवे छे. हरिदासी संप्रदाय मा पण राधाकृष्ण युगक सरकार नी सखीभाव थी उपासना करवा मा आवे छे.

आम विविध भक्ति संप्रदायों मां मुख्यत्वे कृष्णभक्ति नी पूजा- अर्चना - उपासना एक अथवा बीजा प्रकारे करवामा आवे छे, जे मोटाभागे सार्वजनिक भक्तिनो प्रकार छे, अने तदर्थ भारत मा अनेक स्थाने मंदिरों नी स्थापना प्राचीन कालथी करवामा आवी छे. ए तमाम मंदिरों मा देव नी शास्त्रोक्त विधि अनुसार प्राणप्रतिष्ठा करवामां आवी होय छे, अहीं वेद विहित भक्ति नो प्रकार छे जे मर्यादा भक्ति तरीके ओलखाय छे.

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

* 'भक्ति' नुं तात्पर्य अने 'पुष्टिभक्तिमार्ग' (१७) *

****

कर्ममार्ग, ज्ञानमार्ग के उपासनामार्ग अथवा भक्तिमार्ग, आ बधाना मूल मां भारतीय चिंतन मा जे मुख्य बाबत रहेली छे त्ये छे - जन्म-मरण ना बंधन माथी मुक्ति अथवा अमरत्व. आ परिवर्तनशील जगत मां मानवी नुं क्षणभंगुर पार्थिव अस्तित्व अने जीवन मा अनुभवाता दुःखो अने तकलीफों मां थी छुटकारो मेलाववा माटे मनुष्य सदियो थी फांफा मारे छे अने तेना उपाय शोधवा प्रयत्नशील छे.

मनष्य नी खोज अने विविध दार्शनिक विचारधाराओं नो हेतु मात्र जगत नी विशालता के विचित्रता ने जाणावा मात्र नी नथी परंतु जीवन नी घटमाल मां थी मुक्त केवी रीते थवाय तेने अनुलक्षी ने रहेलो छे, विशेषतः भारतीय चिंतन नो हेतु परम तत्त्व ने जाणावा नी साथे तेने पामवा माटे नो रहेलो छे.

तेना कारणे भारत मां विभिन्न दर्शन शास्त्रो अस्तित्व मा आव्या छे. प्रत्येके मोक्ष अथवा मुक्ति ना विविध उपायो बताव्या छे. मोक्ष नो अर्थ मात्र दुःख मांथी छुटकारो नथी परंतु शास्वत सुख नी प्राप्ति तेनो मुख्य हेतु रहेलो छे. तदर्थ शास्त्रो मा धर्म, अर्थ, काम अने मोक्ष ए चार पुरूषार्थो नी विवेचना करवा मां आवी छे, जेनु छेल्लु सोपान मोक्ष छे. तेनी प्राप्ति माटेज शास्रोमां उपाय तरीके कर्म, ज्ञान, भक्ति इत्यादि मार्गो सूचव्या छे, जेनी चर्चा अगाउ करवामां आवी छे.

प्रत्येक मार्ग नी मर्यादा अनुसार भक्तिमार्ग नी विशेषता ना कारणे उपरोक्त भक्ति संप्रदायों अस्तित्व मां आव्या छे. तेथी भक्ति ना वास्तविक स्वरूप ने समजवू जोइए जेथी विभिन्न आचार्यो द्वारा प्रतिपादित भक्तिमार्ग नी विशेषता ने जाणी शकाय कारणके बे प्रकार ना भक्तिमार्ग प्रमुख रुपे अस्तित्व मां छे, जे "मर्यादा भक्तिमार्ग" अने "पुष्टि भक्तिमार्ग" तरीके ओलखाय छे. अगाउ आपणे जोयु तेम भक्तिमार्ग ना मूल वेदकाल थी अस्तित्व धरावे छे, अने रामानुजाचार्यजी इत्यादि आचार्योए तेनु विशेष रुपे प्रवर्तन कर्यु छे, तेम छतां पंदर मी शताब्दी मा प्रादुर्भूत श्रीवल्लभाचार्यजीए तेने "प्रेमलक्षणा भक्ति" तरीके एक विशिष्ट रुपे प्रस्तुत करी तेने उच्चतम कक्षाए प्रस्थापित करी, तेमना अनुयायियो ने सर्वोत्तम फल नी प्राप्ति करावी छे.

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

* 'भक्ति' नुं तात्पर्य अने 'पुष्टिभक्तिमार्ग' (१८) *

****

ज्यारे कर्ममार्ग अने ज्ञानमार्ग नी माफक भक्तिमार्ग नो हेतु पण मुक्ति प्राप्त करवानो होय तो मुक्ति अथवा मोक्ष ना स्वरूप ने समजवु जोइए. श्रीवल्लभाचर्यजी ना दृष्टिकोण थी मुक्ति नो अर्थ मात्र दुःख माथी छुटकारो नथी परंतु अलौकिक शाश्वत आनंद नी प्राप्ति छे. तेथी तेमणे तेआनंदना स्वरुपने अने तेने प्राप्त करवानी विधि समजावी छे.

श्रीवल्लभाचार्यजीना मते, अन्य दार्शनिक विचारधाराओ मुजब मुक्ति मात्र दुःख नी निवृत्ति नी नकारात्मक स्थितिज नथी, परंतु जीवात्मा नी आध्यात्मिक कक्षा अने तेना अधिकार अनुसार प्राप्त थतो शाश्वत आनद छे. शंकराचार्यजी तैत्तरीय उपनिषद वचन "आनंदमय आत्मा" नी स्थिति ध्यान अने क्रिया ना कारणे बतावे छे, त्यांरे श्रीवल्लभाचार्यजी ना मते "आनंदो ब्रह्मेति व्यजनात" श्रुति वचन अनुसार "पुरुषोत्तम" ज आनंद स्वरूप छे. तेथी पुरुषोत्तम नी प्राप्ति थी ज आनंद नी प्राप्ति थाय छे. माटे अलौकिक आनंद नी इच्छा करनार मनुष्य ना जीवन नु ध्येय कृष्णनी प्राप्ति होवु जोइए, तेथी ज तेओ कृष्णाश्रय ग्रन्थ मा कहे छे "पूर्णानंदो हरि:", अर्थात कृष्ण ज पूर्णानंद छे, अने तेमनाथी ज दिव्य आनंद नी अनुभूति थई शके छे. तेज मुक्ति नु सर्वोच्च स्वरूप छे.

तेनाथी उतरती कक्षा नो आनंद अक्षरब्रह्म अथवा वैकुंठ लोक नी प्राप्ति छे जे गणितानंद छे. ज्ञानमार्गीय नु अंतिम फल, जेने मोक्ष कहे छे ते अक्षरब्रह्म नी प्राप्ति छे. वैदिक साधनो जप, तप, दान इत्यादि पर आधारित मक्ति, जेने मर्यादा भक्ति कहे छे, तेना द्वारा प्राप्त थती मुक्ति ना पांच प्रकार बताव्या छे - १.सायुज्य, भगवान मा लीन थई जवु, २.सालोक्य, भगवानना लोक नी प्राप्ति, ३.सामीप्य, भगवान नु सानिध्य प्राप्त थवुं, ४. सारूप्य, भगवान जेवा रुप नी प्राप्ति, अने ५. सार्ष्टि, भगवान जेवु ऐश्वर्य प्राप्त थवुं.

भागवतजी मा कपिलभगवाने मुक्ति माटे माता देवहुतिने मुक्ति माटे "आध्यात्मिक योग" नो उपदेश आप्यो छे, जे मनुष्यना चित्तने संसारासक्तिमां थी छोड़ावे छे, तेनी वृत्तिओ ने अन्यत्र आथड़ती अटकावे छे, सत्संग द्वारा प्रभुमा प्रीति करावी, भगवदाभिमुख करे छे. योग नी उपयोगिता भक्ति ने दृढ करवा माटे छे. तेथी योग ना उपदेश पछी भक्ति नु स्वरूप समजावी तेनी उत्तमतानु निरुपण कर्यु छे. कपिल भगवान कहे छे के "भगवान ना भक्त ने हुं सायुज्य मुक्ति आपु तो पण ते तेनी स्पृहा करतो नथी. ए तो मात्र मारी सेवा अने कथा मां ज मग्न रहे छे"

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

* 'भक्ति' नुं तात्पर्य अने 'पुष्टिभक्तिमार्ग' (१९) *

****

'मर्यादा भक्तिमार्ग' अथवा वैदिक भक्तिमार्ग मा शास्त्रो ना विधि-निषेध ना विधानों नुं महत्त्व रहेलु छे, जेमां भगवान नी कोई विभूतिनी उपासना, जप, तप, दान, यज्ञ आदि नो उपक्रम करवानो होय छे. ते बधा द्वारा मोक्षनी प्राप्ति ए लक्ष होय छे. मर्यादामार्ग मा ज्ञान, कर्म तथा योग नी प्रक्रिया पण

समाहित होय छे, जेनो हेतु अंतःकारांनी शुद्धि छे. तेनुं अंतिम ध्येय अक्षरब्रह्म अर्थात ब्रह्मभावनी प्राप्ति होय छे.

मर्यादा भक्तिनुं विशिष्ट पासु उपासक द्वारा विविध वैदिक साधनोंनु अवलबंन छे. मर्यादाभक्ति ना मूल मा ब्रह्मज्ञान द्वारा मुक्ति प्राप्त करवानी इच्छा रहेली होय छे. तेथी भक्तिने मुक्ति अथवा अमरत्व नी प्राप्ति ना मुख्य उद्देश्य मा सहायक गणवामा आवे छे. 'विद्या' ना पांच पर्वो - वैराग्य, सांख्य, योग, तपः, अने भक्ति मा पण भक्ति अन्य चार पर्वो नी माफक साधन ना रूपमा गणवा मां आवी छे, अर्थात मर्यादाभक्ति नोज प्रकार छे.

शांडिल्य भक्ति सूत्रों तेमज अन्य भक्ति शास्त्रो मा पण मर्यादा भक्ति ना स्वरूप नेज समजाववामां आव्युछे, जेनु फल सायुज्य मुक्ति अथवा भगवान मा एकरुप थई जवु छे. भागवत मा वर्णित 'नवधा भक्ति' - श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पादसेवन, अर्चन, वंदन, दास्य, सख्य अने आत्मनिवेदन पण मर्यादाभक्ति ना प्रकार छे, जेना द्वारा विभिन्न भक्तो ने मोक्ष प्राप्ति थया नु वर्णन भागवत मा करवामा आव्यू छे. आ विविध भक्ति द्वारा सालोक्य, सामीप्य, सारूप्य, सायुज्य तथा सार्ष्टी एम पांच प्रकार नी मुक्ति प्राप्त थाय छे.

मर्यादाभक्तिमार्ग ने 'विहितामार्ग' पण कहेवाय छे, कारण के ते शास्त्रिय आज्ञा अनुसार आचारवा मा आवे छे. श्री वल्लाभाचार्यजीए तेमना अणुभाष्य ग्रन्थ मा भक्ति ना अन्य बे प्रकार पण बताव्या छे - १. 'सोपाधिक' (शर्ती) तेमज 'अनुपाधिक' (बिनशर्ति) अने २. 'साधारणी' तेमज 'असाधारणी'. साधारणी भक्ति मा भक्त भगवान ना विविध अवतारो ने भजे छे, ज्यारे असाधारणी भक्ति एकांतिकी होय छे, जेमां भक्त कोई एक रूपमा आसक्त थई, तेनीज भक्ति करे छे. मर्यादा भक्तिमार्ग मा भगवान नी विभिन्न विभूतियो नी भक्ति करवामा आवे छे, परंतु श्रीवल्लभाचार्यजी भगवान श्रीकृष्णनेज आराध्य बतावे छे.

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

* 'भक्ति' नुं तात्पर्य अने 'पुष्टिभक्तिमार्ग' (२०) *

****

आ विभिन्न प्रकार नी भक्ति थी विलक्षण भक्ति महाप्रभु श्रीवल्लभाचार्यजीए प्रवर्तित करी छे, जे "पुष्टि भक्ति" कहेवाय छे. भारतीय तत्त्वचिन्तन मा तेमणे प्रतिपादित करेलु "शुद्धाद्वैत दर्शन" एक आगवु स्थान धरावे छे. विशेषतः भारतमा पंदरमी शताब्दिमां प्रसारित थयेल "वैष्णवीझम" - भक्ति-आंदोलन मा तेमनु विशिष्ट योगदान रहेलु छे. तेमना "शुद्धाद्वैत ब्रह्मवाद" विचारधारा अंतर्गत तेमणे प्रवर्तित करेल "पुष्टिभक्तिमार्ग" जे सामान्यतः "पुष्टिमार्ग" ना नाम थी ओलखाय छे, ते सीमाचिन्ह रुप छे.

अगाउ जोयु तेम शास्त्रोमा वर्णित मोक्ष प्राप्तिना विविध मार्गो - कर्ममार्ग, ज्ञानमार्ग अने भक्तिमार्ग मा भक्तिनी विशिष्टता ने रामानुजाचार्यजी, मध्वाचार्यजी वगेरे भक्तिसंप्रदाय ना आचार्योऐ उजागर करी तेनी महिमा ने वधार्यो हतो. परंतु ते 'विहिता भक्ति' जे वेदादि शास्त्रो नी मर्यादा अनुसार प्रतिपादित करवामा आवेली, तदर्थ 'मर्यादा भक्ति' तरीके प्रतिष्ठित हती. तदनुसार तेना आचरण माटे ते सौ कोईने उपलब्ध न हती.

श्रीवल्लभाचार्यजीए तत्कालिन समय मा प्रवर्तीत समाज-व्यवस्था ने अनुलक्षिने जेमां अमुक

जाति, वर्ग माटे शास्त्रोमा विभिन्न प्रतिबंधों हता त्यारे, समग्र मानव जाति ना उद्धार माटे सर्वोद्धारक परब्रह्म परमात्मा भगवान श्रीकृष्ण प्रत्ये निष्काम - निर्हेतुक प्रेम पर आधारित "पुष्टि भक्ति" नो विशिष्ट द्रष्टिकोण प्रवर्तित करी भक्ति ने सर्वोच्च शिखरे पहोचाड़ी हती. तेमना मन्तव्य प्रमाणे कोई पण जाति, लिंग, धर्म आदि ना भेदभाव विना सौ कोई भगवद प्राप्ति ना अने तदर्थ भक्ति ना अधिकारी होइ शके छे, केमके तेमणे प्रवर्तित करेली पुष्टिभक्ति शास्त्रोमा बतावेला अथवा भक्त द्वारा करवामा आवता जप- तप आदि साधनो पर आधारित नहीं, परंतु स्वयं भगवान नी कृपा पर अवलंबित छे.

"पुष्टिभक्ति" नी संकल्पना श्रीवल्लभाचार्यजीए श्रुति विधानों ना आधारे रचेली छे. कठोपनिषद नु वचन छे - "नायमात्मा प्रवचनेन लभ्य, न मेधया, न बहुना श्रुतेन, यमे वैश वृणुते, तेन लभ्य". अर्थात परमात्मा बहु प्रवचनों थीं, बुद्धि द्वारा के कथा श्रवण थी मलता नथी, ते स्वयं जेनु वरण करे, एटले जेना पर कृपा करे तेने तेओ प्राप्त थाय छे. आ श्रुति वचन श्रीवल्लभाचार्यजी द्वारा प्रवर्तित 'पुष्टिभक्ति' ना मुलमां छे.

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

* 'भक्ति' नुं तात्पर्य अने 'पुष्टिभक्तिमार्ग' (२१) *

****

श्रीवल्लभाचार्यजी द्वारा प्रतिपादित 'पुष्टिभक्तिमार्ग' ना सिद्धान्त ना मूल मा उपरोक्त उपनिषद वचन उपरान्त तेमणे स्वीकारेल सर्वसंदेहवारक प्रमाण श्रीमद भागवत छे, जेना षष्ट स्कन्ध नी 'पोषण लीला' मा कह्यु छे - " पोषणं तद् अनुग्रह". तेमां भगवान ना अनुग्रह अथवा कृपा द्वारा जीव ना पोषण नो सन्दर्भ समजाववा मां आव्यो छे. भागवतम मां वर्णवेली भगवान नी बार प्रमुख शक्तिओ मा 'पुष्टि' अर्थात 'कृपा' भगवान नी विशिष्ट शक्ति छे.

उपरिक्त श्रुति वचन "यमे वैश वृणुते तेन लभ्य" मा भगवान नी कृपा शक्ति नो निर्देश मले छे. तेओ जेनु वरण करे अर्थात जेना पर पोतानी कृपा वर्सावे तेने तेओ प्राप्त थाय. आनु स्पष्ट उदाहरण पण भागवतजी मा वर्णवेल 'अजामिल' ना उद्धार ना प्रसंग मा मले छे. कृपा करवी ते भगवान नुं स्वतन्त्र अने विशिष्ट लक्षण होवाना कारणे अजामिल जेवा दुष्ट ना कर्तुत्व नो विचार कर्या विना भगवान पोतानी इच्छा थी जीव नो उद्धार करे छे, अने तेने माटे कोइपन साधन नी अपेक्षा राखता नथी ते समजी शकाय छे.

भागवत मा वर्णवेली दशम स्कन्ध नी विविध लीलाओ पण आ हकीकत नी पुष्टि करे छे. पूतना जेवी राक्षसी, जे भगनान कृष्ण ना विनाश नो हेतु लईने आवेली हती, तेने पण भगवाने माता तुल्य स्थान आपी मोक्षनी प्राप्ति करावी हती. ते भगवान नी अतुलित कृपा नुज परिणाम होइ शके. तामस स्वभाव वाला मूढ़ व्रजभक्तो, जेमनी भगवद प्राप्ति माटे वेद प्रतिपादित कोई योग्यता न होवा छतां, जेओ सर्वप्रकारे दीन-हीन, अज्ञानी अहीर जेवी निम्न जातीनी स्त्रियो हती, तो पण एक मात्र तेमनो भगवान श्रीकृष्ण प्रत्ये निर्व्याज प्रेम होवाना कारणे भगवाने तेमने पोतानु स्वरूपात्मक फलदान कर्यु हतु. अहीं पण भगवान पोतानी कृपा शक्ति द्वारा पोतानी इच्छाथी जीव नो उद्धार करे छे, तेंनु स्पष्ट प्रमाण मले छे.

श्रीवल्लभाचार्यजी द्वारा प्रतिपादित 'पुष्टिभक्ति' ना सिद्धान्त मां उपरोक्त प्रमाणो नो आधार छे. तदर्थ, तेमणे प्रवर्तित करेलो 'पुष्टिभक्तिमार्ग' "अविहिता मार्ग", अर्थात वेद मा निर्दिष्ट विधि-निषेध ना

विधानों थी पर होवा छतां ते अशास्त्रीय के अवैदिक मार्ग नथी, परंतु वेद संमत मार्ग छे तेम कहेवामां अतिशयोक्ति नथी कारणके तेना मूल मां श्रुति तेमज अन्य भगवद शास्त्रो ज प्रमाण छे.

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

* 'भक्ति' नुं तात्पर्य अने 'पुष्टिभक्तिमार्ग' (२२) *

****

उपरोक्त विविध शास्त्रिय तथ्यों ना आधारे भगवान ने पामवाना उपाय तरीके, भगवान ना कृपा करवाना स्वभाव नो आधार लइने श्रीवल्लभाचार्यजीए "पुष्टिमार्ग" ना नामे विशिष्ट प्रकार ना 'भक्तिमार्ग' ना सिद्धान्त नुं प्रतिपादन कर्यु छे, जेमां भगवान ने प्रसन्न करवा माटे परम तत्त्व श्रीकृष्ण माटे वृजना गोपीजनोना ह्रदयमा जेवो शुद्ध प्रेम अने लगन हतां तेवां अक्षुण्ण प्रेमने आवश्यक गण्यो छे. भक्तना ह्रदयना तेवां प्रेम ने कारणे ज भगवान पण कहे छे - "अहं भक्त पराधीनो", अर्थात 'हुं भक्त ने वश छुं. आ भगवान नी कृपा नुं सर्वोच्च शिखर छे, कारण के त्यांरे भगवान भक्त ना गुण - दोष इत्यादिने लक्ष माँ लीधा विना तेने कृपा नुं दान करे छे, जेना अनेक अर्वाचीन - प्राचीन उदाहरणो पुराणो अने इतिहास मा प्राप्त छे.

भगवान नी आ विशेषता ने पारखनारा महाप्रभु श्रीवल्लभ प्रथम आचार्य हतां जेमणे "पुष्टिमार्ग" प्रवर्तित करी 'भक्तिमार्ग' नुं एक विशिष्ट स्वरूप प्रकट कर्यु छे, जेना कारणे कोइपण जाति, लिंग, धर्म वगेरे ना भेदभाव विना भगवद प्राप्ति नु सर्वोच्च फल प्राप्त करी शके छे, भगवान नी अलौकिक लीलाओ नो अनुभव करी शके छे.

श्रीलालुभटजी जेवा महानुभावोए तेमना ग्रंथो मां चार प्रकार नी "पुष्टि" नुं निरुपण कर्यु छे - महापुष्टि, सर्वबाधक पुष्टि सामान्य पुष्टि अने विशेष पुष्टि.

१.महापुष्टि - आ शक्ति भगवान नी सर्वोच्च कृपाशक्ति छे, जे भगवद प्राप्ति मा बाधा बनती सर्व प्रकारनी अड़चणों दूर करी पोतानी प्राप्ति करावे छे.

२. सर्वबाधक पुष्टि - भक्तने भोगववा पड़ता कर्म फ्लो, तथा सांसारिक बंधनों माथी छोडावी पोतानी प्राप्ति करावनारी भगवान नी आ शक्ति छे.

३. सामान्य पुष्टि -भगवान नी आ कृपा शक्ति जीव ने 'पुरुषोत्तम' नी प्राप्ति सिवाय तेने इच्छेला अन्य फलों नी प्राप्ति करावे छे.

४. विशेष पुष्टि - आ विशेष कृपा द्वारा भक्तने एवा प्रकारनी भक्ति नुं भगवान दान करे छे, जेना द्वारा तेने पुरुषोत्तम ना स्वरूपनो तथा तेमनी अलौकिक लीलाओ नो अनुभव थाय छे. आनेज श्रीवल्लभाचार्यजी 'पुष्टि भक्ति' कहे छे. पुष्टिमार्ग नी आ आधारशिला छे.

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

* 'भक्ति' नुं तात्पर्य अने 'पुष्टिभक्तिमार्ग' (२३) *

****

भागवतजी ना एकादश स्कन्ध मा पुष्टिभक्ति ना तात्पर्य ने प्रमाणित करतु भगवान नु वचन छे ज्यां तेओ स्वयं उद्धवजी ने कहे छे - "मने पोतानी जात सहित समर्पित करनार मारो भक्त मने छोडीने ब्रह्माजी नु पद, देवराज इंद्र नुं स्थान, सार्वभौम सम्राट नुं पद, स्वर्गलोक, योगनी सर्वोच्च सिद्धि के मोक्ष नी पण कामना करतो नथी (भा.११.१४.१४). श्रीवल्लाभाचार्यजी द्वारा प्रवर्तित पुष्टिभक्ति नी आ पराकाष्ठा छे. पुष्टिभक्ति द्वारा मात्र कृष्ण ने पामवा नी ज चाह होय छे. न मोक्ष, न सालोक्यादि मुक्ति, न वैकुंठ के अक्षरब्रह्म नी प्राप्ति. पुष्टिभक्तिमार्ग नु लक्ष छे - साक्षात पुरुषोत्तम नी प्राप्ति !

पुष्टिभक्तिमार्ग भगवान श्रीकृष्ण नी प्रेमलक्षणा भक्ति नी अपेक्षा राखे छे. तेमां विशेषता ए छे के भक्ति द्वारा अन्य कोई फल पामवा नुं नथी, श्रीकृष्ण नी भक्ति एज फल छे. आ प्रकार नी भक्ति जीव पोतानी इच्छा थी करी शकतो नथी, केमके ते तेना पोतांना साधन के सामर्थ्य थी थई शकती नथी. माटे ज श्रीवल्लभाचार्यजी कहे छे - "अनुग्रहः पुष्टिमार्गे नियामक ईति स्थिति" (सि. मु.). महाप्रभु श्रीहरिरायजीए पण पोताना ग्रंथ- 'पुष्टिमार्गलक्षणानि' मां खुलासो कर्यो छे के पुष्टिमार्ग केवल भगवान नी कृपा पर अवलंबित छे, ते जीव ना गुणदोष थी निरपेक्ष छे, मात्र अने मात्र स्वयं भगवान ना वरण पर आधारित छे. अर्थात तेओ स्वयं इच्छे तेने पोतानी प्राप्ति करावी शके छे. एटले के पुष्टिमार्ग माँ प्रवेश पण जीवना प्रयत्न के इच्छा थी नहीं, भगवान नी इच्छा थीज थाय छे.

आ हकीकत ने श्रीगुसाइंजी अने बादशाह अकबर ना प्रसंग थी सहेलाई थी समजी शकाय.

बादशाह अकबर श्रीगुसाइंजी थी अति प्रभावित हतो, अने तेमना दर्शने अवारनवार आवतो. एक समये तेणे आवीने श्रीगुसाइंजी ने प्रश्न कर्यो - "महाराज, साहब कैसे मिले ?". ते जाणवा मागतो हतो के खुदा ने केवीरिते पामी शकाय ?. श्रीगुसाइंजीए त्वरित जवाब आप्यो - "जैसे आप मिले !". श्रीगुसाइंजी नु तात्पर्य ए हतु के दिल्ही ना बादशाह ने मलवु होय तो दिल्ही जई केटली बधी विधि - शिष्टाचार मांथी पसार थवुं पड़े, परंतु ज्यारे बादशाहे स्वयं श्रीगुसाइंजी ने मलवा विचार्यु त्यारे कोई पण अडचण विना श्रीगुसाइंजी तेने मली शक्या !

आज वात प्रभु माटे छे. जेने पामवा ज्ञानियों, योगीयो हजारो वर्ष आकरी तपस्या करे छे, ते प्रभु स्वयं इच्छे तो क्षण मा तेने पामी शकाय छे. श्रीवल्लभाचार्यजीए प्रतिपादित करेल पुष्टिमार्ग ना मुलमां आ सिद्धान्त रहेलो छे.

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

* 'भक्ति' नुं तात्पर्य अने 'पुष्टिभक्तिमार्ग' (२४) *

****

भगवान द्वारा भक्त नु वरण एटलेज 'भगवद कृपा'. तेज 'पुष्टिभक्तिमार्ग' ना मूल मां छे, कारणके पोताना स्वरूप नो साक्षात्कार कारावववानी भगवान नी स्वयं नी इच्छा पुष्टिभक्ति ना पायामां छे. तदर्थ भगवान जेना पर पोतानो अनुग्रह वरसाववा इच्छे छे, तेमना मा सृष्टिनी उत्पत्ति समयेज पोतानी भक्ति नुं बीज आरोपित (स्थापित) करे छे. एवा जीवो 'पुष्टि जीव' कहेवाय छे.

श्रीवल्लभाचार्यजीए ए कक्षा ना जीव नुं स्वरूप, तेमनी उत्पत्ति, रुचि, लक्षण, अधिकार अने फल विशे निरुपण पोताना 'पुष्टिप्रवाहमर्यादा भेद' ग्रन्थ मां कर्यु छे. भगवान द्वारा विशेषतः अनुग्रहित

होवाना कारणे पुष्टिजीवोमां भगवाद प्रेम अने पुष्टिभक्तिमार्ग मां रूचि सहज होय छे. भगवान थी छूटा पड़ेला एवा पुष्टिजीवोनो उद्धार करवानो तेमज तेओ ने भगवान साथे जोडवानो उद्देश्य श्रीवल्लभाचर्यजी ना प्राकट्य नो हतो. तदर्थ तेमणे दीर्घ काल पर्यन्त समग्र भारत मां परिभ्रमण करी पोते प्रतिपादित विभिन्न भागवत-शास्त्रो पर आधारित पोतानी दार्शनिक विचारधारा अने तदन्तर्गत 'पुष्टिभक्तिमार्ग' नामे साधनाप्रणाली प्रवर्तित करी हती. तेमना जीवनकाल मां तेमणे स्वतःपुष्टिजीवो ना उद्धार करवानु प्रयोजन अनेक जीवोने प्रत्यक्ष मा शरणे लई पार पाड्यु हतु, ते तेमना सेवको नी वार्ता साहित्यथी प्रमाणित थाय छे.

तेमना अनवतार काल मा परोक्ष मां पण अन्य अनेक पुष्टिजीवो ना उद्धारार्थे श्रीवल्लभाचार्यजीए पोतानी वंश परंपरा प्रस्थापित करी छे, अने मार्गदर्शन माटे पोतानु विपुल ग्रंथ साहित्य प्रकट कर्यु छे, जेना द्वारा भगवान नी चाली रहेली अविरत सृष्टिलीला मां आवागमन करतां असंख्य पुष्टिजीवोनो पण उद्धार थई शके, तेओ भगवद प्राप्ति करी शके.

श्रीवल्लभाचार्यजीए स्वयं भगवान श्रीकृष्ण ना वचनो नो आधार लईने पुष्टिभक्तिमार्ग ने प्रवर्तित कर्यो छे. भगवान गीता मा कहे छे -" मने वेदो वड़े, तप, दान के यज्ञ वड़े जोवो शक्य नथी परंतु मात्र अनन्य भक्ति वड़े ज मने जोई, जाणी अने मारामा प्रवेश करी शकाय छे."(११/ ५३-५४). भागवत मां पण भगवाने आवा ज वचन कह्या छे. एकादश स्कन्ध मा तेओ कहे छे -"हुं मात्र अनन्य श्रद्धा अने भक्ति थी ज वश थाउ छुं. मने प्राप्त करवानो ते एक ज उपाय छे". (११. १४. २०). आ छे 'पुष्टिभक्तिमार्ग' नी आधारशिला !

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

* 'भक्ति' नुं तात्पर्य अने 'पुष्टिभक्तिमार्ग' (२५) *

****

श्रीवल्लभाचर्यजी द्वारा प्रवर्तित 'पुष्टिभक्तिमार्ग' ना हार्द ने समाजवा माटे तेमना "भक्ति" शब्द ना तात्पर्य नो विचार करवो जरुरी गणाय कारणके अगाउ आपणे अनेक प्रकार ना भक्तिमार्ग विशे चर्चा करी. ते बधाथी पुष्टिभक्तिमार्ग विलक्षण छे.

'भक्ति' शब्द संस्कृत भाषा ना 'भज' धातु ने 'क्तिन' प्रत्यय लगाडवाथी बन्यो छे. 'भज' शब्द ना अनेक अर्थो मां अही तेने 'सेवा' ना अर्थ मां लेवामां आव्यो छे. 'क्तिन' प्रत्यय द्वारा 'भक्ति' शव्द स्त्रीलिंग वाचक बनाववा मा आव्यो छे, कारणके अही लागणी सभर अथवा स्नेह सभर सेवा ना अर्थ मा 'भक्ति' नुं तात्पर्य छे. प्रेम अथवा लागणी मन नो विषय छे. तेथी एवी भक्ति नो निर्देश श्रीवल्लभाचार्यजी आपी रह्या छे, जेमां स्नेह सभर सेवा मां भक्त नु मन जोडाएल होय. तदर्थ तेओ पोताना 'सिद्धान्तमुक्तावली ग्रन्थ' मा 'कृष्णसेवा' नो उपदेश आपता कहे छे -"चेतस्तत प्रवणं सेवा", अर्थात एवी सेवा जेमां भक्त नु मन प्रभु साथे जोड़ाई जाय.

भक्ति अथवा सेवा ना अनेक प्रकारों होइ शके छे. सेवा शरीर अथवा द्रव्य ना उपयोग थी पण थई शके छे. कोई नोकर पण पोतांना तन थी स्वामी नी सेवा करे छे. कोई जरूरतमंद व्यक्ति ने द्रव्य सहाय करीये, ते पण सेवा नुज स्वरूप छे. परन्तु भक्ति ना जे पहेलु नो श्रीवल्लभाचार्यजी निर्देश आपी रह्या छे

ते लागणी पूर्वक अविरत भगवान मां मन परोववानी वात करी रह्या छे. उदाहरण आपता कहे छे के जेवीरीते गंगा नदी नो जलप्रवाह निरंतर समुद्र मा वहे छे, तेवीरीते भक्त ना मन नी स्थिति बने, तेंनु प्रेमसभर चित्त सतत भगवान मा प्रवण थाय तेवी भक्ति श्रीवल्लभाचार्यजीने अपेक्षित छे.

नारद पंचरात्र मा व्याख्यायित भक्ति नी परिभाषा स्वीकारतां श्रीवल्लभाचार्यजी निबंध ना 'शास्त्रार्थ प्रकरण' मा कहे छे - "माहात्म्यज्ञान पूर्वस्तु सुदृढः सर्वतोधिकः स्नेहो भक्तिरिति प्रोक्तः", अर्थात - 'माहात्म्य ज्ञान साथे सुदृढ (कदी न डगे तेवो) अने सर्वथी अधिक भगवान मां स्नेह होवो, तेने भक्ति कहेवाय'. जे भक्ति नो आप अही निर्देश करी रह्या छे, तेमां त्रण बाबत आवश्यक छे - १. प्रेम भगवान (श्रीकृष्ण) प्रत्ये होवो जोइए, २. भगवान ना माहात्म्य नु ज्ञान होवु जरुरी छे, अने ३. क्यारेय चलायमान न थाय तवो सौथी अधिक होवो आवश्यक छे.

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

* 'भक्ति' नुं तात्पर्य अने 'पुष्टिभक्तिमार्ग' (२६) *

****

निबंन्ध नी उपरोक्त कारिका नो खुलासो करतां स्वयं श्रीवल्लभाचार्यजी कहे छे के भगवान मां स्नेह उत्पन्न थवो तेने 'भक्ति' कहेवाय. भगवत संबंधी 'रति' अथवा 'प्रीति' ने 'भाव' कहे छे. रति नो अर्थ छे 'स्नेह'. 'देवत्व' कहेवानु तात्पर्य देवनुं अर्थात भगवान नुं माहात्म्य. आम भक्ति मां स्नेह अने भगवान नुं माहात्म्य बन्ने आवश्यक छे एम समाजाव्यू छे.

भगवान ने आत्मत्व थी जाणवाथी तेमनामां निरुपधि प्रेम थाय छे. "तत्वमसि" इत्यादि श्रुति वाक्यो मा पण स्नेह ने माटे ज आत्मत्व नुं निरुपण करवा मां आव्यू छे. केटलाक आ वाक्य ने जीव ज ब्रह्म होवानु प्रतिपादन करवा माटे प्रमाण माने छे, परंतु मात्र "तत्त्वमसि" के "अहं ब्रह्मास्मि" द्वारा जीव ने ब्रह्मज्ञान थई शके नहीं. ब्रह्म नो साक्षात्कार थवो ते ब्रह्म ने आधीन छे, ते प्रसन्न थाय तो ज ब्रह्म प्रकट थाय अने तो ज तेमनु ज्ञान थाय, जेवी रीते लौकिकमां राजा प्रसन्न थाय तो तेने मली शकाय छे. एटले ब्रह्म ना ज्ञान रूपी फल पण भगवद आविर्भाव थाय तोज मले अने भगवद आविर्भाव माटे श्रुति मा प्रेमपूर्वक नी सेवा नुं तेमज अवज्ञानादि दोषो ना निवारण माटे नुं माहात्म्य बताव्यू छे.

छान्दोग्य उपनिषद ना वचन "एतदात्म्यम इदं सर्वं तत्सत्यं सआत्मा तत्त्वमसि" ना प्रथम अंश मा सृष्टिनी उत्पत्ति संबंधी भगवान ना माहात्म्यने प्रतिपादित करे छे, ज्यारे 'तत्त्वमसि' नो सन्दर्भ तेमनामां स्नेह नो अंश प्रकट करे छे. श्वेताश्वेतर उपनिषद मां पण "परास्य शक्तिर्विविधैव श्रूयते स्वाभाविकी ज्ञान बल क्रिया च" मा श्रुति भगवान नी शक्ति अचिन्त्य अने अनंत होवा नु कहे छे. आ भगवान नु माहात्म्य ज्ञान प्रकट करे छे. वळी शांडिल्य सूत्र "सा परानुराक्तिरिश्वर" मां भगवान मा निरुपधि स्नेह ने भक्ति बतावी छे.

बृहदारण्यक उपनिषद मा "अग्नि विस्फुलिंग" (अग्निमां थी तनखा छूटा पड़े तेम) ना दृष्टांत थी जीव ने भगवान नो अंश कह्यो छे, तेम गीताजी मा भगवान स्वयं कहे छे -"ममैवांशो जीव लोके", जीव ने भगवान नो अंश कहेलो छे. तदर्थ जीव अने परमात्मा नो अंश-अंशी भाव थी ऐक्य रहेलु छे. पोताना स्वरूप मां बधाने स्वाभाविक स्नेह होय छे. देहमां स्नेह आत्मा ने लईने होय छे. अर्थात भगवान मा स्नेह

ए सहज प्रक्रिया छे.

उपरोक्त सर्वे प्रमाणो थी भक्ति ना अनिवार्य अंग तरीके भगवान नु माहात्म्य ज्ञान तेमज तेमना मा सुदृढ़ तथा सर्वाधिक स्नेह नी आवश्यकता स्पष्ट थाय छे.

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

* 'भक्ति' नुं तात्पर्य अने 'पुष्टिभक्तिमार्ग' (२७) *

****

भक्ति ना अंगभूत माहात्म्यज्ञान थी तात्पर्य भगवान ना ऐश्वर्यादि गुणो मात्र ज् नथी परंतु 'भगवान सर्व मा छे अने सर्व कांई भगवान मा छे' (निबंन्ध - शा. प्र.), अर्थात भक्त भगवान नु अभिन्न अंग छे एवी भक्त नी समज अथवा ज्ञान तेने भगवान मां प्रेम नी पराकाष्ठा सुधी पहोंचाडे छे. तेने माटे बृहदारण्यक उपनिषद मां कहे छे के मनुष्य पोताने सौथी विशेष प्रेम करे छे. तदर्थ भगवान मा भक्त नु प्रियत्व प्रकट थाय छे.

अगाउ कह्यु तेम श्रीवल्लभाचार्यजी ना मते उपनिषद वचन "तत्त्वमसि" नुं तात्पर्य जीव ना भगवान साथे ना तादात्म्य सम्बन्ध ने दर्शावे छे, जेना कारणे तेनो भगवान प्रत्येनो प्रेम सुदृढ़ अने सर्वतोधिक उत्पन्न थाय छे, जे भक्ति नी चरम सीमा छे.

स्नेह भक्तिनुं अभिन्न अंग होवा छतां तेनो उद्‌भव, जेनु वरण भगवान स्वयं करे छे, अर्थात जेने पोतांना कृपापात्र गणे छे, तेनामां त्वरित थाय छे. ज्यारे अन्य जीवोमा ते क्रमशः सद्‌गुरु ना संग - उपदेश थी, अथवा शास्त्रना ज्ञानथी निष्काम कर्म, ज्ञान, योग, भागवत मां निरूपित नवधा भक्ति ना नव सोपान चढ़ी, आत्मनिवेदन पछी पामे छे. तेने 'विहिता भक्ति' कहे छे.

श्रीवल्लभाचार्यजी शास्त्रीय साधनो पर आधारित नहीं परंतु भगवान मां निश्वार्थ, निष्काम अक्षुणण प्रेम ना कारणे स्वयं भगवान नी कृपा ना कारणे प्राप्त थती निर्गुण भक्ति नुं प्रतिपादन - प्रवर्तन कर्यु छे,जेने ,'प्रेमलक्षणाभक्ति' कहे छे, अने जेनु लक्षबिन्दु भगवान नुं सगुण - साकार स्वरूप श्रीकृष्ण छे.

विभिन्न भक्ति संप्रदायों द्‌वारा प्रवर्तित शास्त्रोक्त भक्ति ना प्रकारों नी अगाउ चर्चा करी तदनुसार तेमां ज्ञान, क्रिया, श्रद्‌धा, उपासना , पूजा, जप, दान इत्यादि अनेक समावेश करवा मां आवेलो जोवा मले छे. परंतु भक्तिना वास्तविक जे स्वरुपने श्रीवल्लभाचार्यजी प्रतिपादित करी रह्या छे, ते आनाथी विलक्षण छे. श्रीगुसाइंजी श्रीविट्‌ठलनाथजी (श्रीवल्लाभाचार्यजीना द्‌वितीय पुत्र) ए पोताना 'भक्तिहंस' नामक ग्रन्थ मा, जे अर्थ मा श्रुति तेमज गीता मा भक्ति ने मुक्ति अथवा भगवद प्राप्ति नो हेतु बताव्यो छे, तेना सन्दर्भ मां उपरोक्त प्रकारों समाहित करवा सामे शंका उत्पन्न करी छे.

तदर्थ श्रीवल्लभाचार्यजी द्‌वारा प्रवर्तित पुष्टिभक्तिमार्ग नुं अनुसरण करवा माटे 'भक्ति ना तात्पर्य' ने स्पष्टपणे समजवा नी आवश्यकता छे.

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

* 'भक्ति' नुं तात्पर्य अने 'पुष्टिभक्तिमार्ग' (२८) *

****

श्रीवल्लभाचार्यजी नुं ध्येय पूर्ण पुरुषोत्तम परब्रह्म परमात्मा श्रीकृष्ण नी प्राप्ति छे, जे श्रुति वचन प्रमाणे मात्र तेमनी स्वयं नी कृपा थी ज करी शकाय छे. कोई साधन रूपा भक्ति थी पूर्णपुरुषोत्तम नी प्राप्ति थई शकति नथी. आ वात ने श्रीगुसाइंजीए दलिलपूर्वक 'भक्तिहंस' ग्रन्थ मा समजावी छे.

केटलाक विचारकों गीता अने अन्य शास्त्रना आधारे ज्ञान तथा कर्म नी तुलना भक्ति साथे करे छे अने तेने विकल्प रुपे प्रस्तुत करे छे, अथवा भक्ति ने क्रियात्मक प्रक्रिया बतावे छे, परंतु ते अप्रस्तुत छे तेम शांडिल्य भक्तिसूत्रो ना खुलासा थी स्पष्टपणे समजी शकाय छे (१.१.७ / ९), करणके भक्ति मनुष्य ना प्रयत्न नु फल नथी, परंतु भगवान नी कृपा नु परिणाम छे जे भक्त ना हृदयमा स्वयं स्फुरित थाय छे. तेथी मात्र कोई क्रियाना उपक्रमने अथवा केवल श्रद्धाने साचा अर्थ मां भक्ति कही शकाय नहीं. ए वात साची छे के 'श्रद्धा' अध्यात्म द्रष्टिकोण नु अगत्य नुं अंग छे, अने गीतामा कह्यु छे तेम श्रद्धा ने भक्ति नुं अंग कही शकाय, परंतु ते स्वयं भक्ति नथी.

श्रीवल्लभाचार्यजीए आ तथ्यने पोताना 'भक्तिवर्धिनी' ग्रंथ मा समजावी छे. जे जीवात्मा मां 'भगवतकृपा' बीजभाव ना रूपमा अस्तित्व धरावे छे, ते जीवात्मा मां क्रमशः प्रेम, आसक्ति अने व्यसन ना रूपमा अंकुरित, पल्लवित, पुष्पित थई भक्ति रुपे फलित थाय छे, जेने तेओ 'पुष्टिभक्ति' कहे छे. भगवान नी कृया ज्यारे भगवान तरफ थी भक्त नी दिशामा वहे त्यांरे तेने 'पुष्टि' कहेवाय छे, अने ते ज्यारे भक्त ना हृदयमा थी परावर्तित थई भगवान तरफ वहे त्यांरे तेने 'पुष्टिभक्ति' कहेवाय. तदर्थ 'भक्ति' नुं यथार्थ स्वरूप आ 'पुष्टि भक्ति' छे, जे पुरुषोत्तम नी प्राप्ति करावी शके छे.

भक्ति ना पुरस्कर्ता अने प्रवर्तक अन्य आचार्यो - रामानुजाचार्यजी और मध्वाचार्यजीए महद अंशे उपासना तेमज पूजा ने भक्ति रुपे प्रस्तुत करी छे,जेनो हेतु मोक्ष प्राप्ति छे, पुरुषोत्तम नी प्राप्ति नहीं. वैदिक तेमज आगम शास्त्रीमा निरूपित उपासना आदिनो प्रकार पण विविध देव-देवियो नी सकाम भक्ति ना रुपमा छे, जेनु लक्ष स्वर्गादि सुख नी प्राप्ति अथवा मोक्ष प्राप्ति के अक्षरोपासना ना रूप मां छे. क्यांक मंत्रोपासना नो प्रकार पण छे.

श्रीगुसाइंजीए स्पष्टता पूर्वक समाजाव्यू छे के आ बधा भक्तिना प्रकारों मा पुरुषोत्तम नी प्राप्ति नथी, जे समग्र अस्तित्व नु मूल छे, सृष्टि ना कारण रूप छे, जे पूर्ण आनंद नुं स्वरूप छे. सर्व उपासना पद्धतिओ नुं लक्ष ते पूर्ण पुरुषोत्तम नी विभूति स्वरूपो नी प्राप्ति छे, ज्यारे पुष्टिजीव नु लक्ष तो मात्र 'आनंद करपाद मुखोदरादि' एवा यशोदोत्संगलालित श्रीकृष्ण छे, केमके भागवत कहे छे - "कृष्णस्तु भगवान स्वयं".

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

* 'भक्ति' नुं तात्पर्य अने 'पुष्टिभक्तिमार्ग' (२९) *

****

उपरोक्त विधानों थी स्पष्ट थाय छे के वेदोक्त उपासना के पूजा विधि श्रीवल्लभाचार्यजीए प्रतिपादित करेल लक्ष नी प्राप्ति माटे भक्ति नु स्वरूप के विकल्प होइ शकता नथी, कारणके उपासना मुलभुत रुपे 'सकाम' होय छे, अर्थात तेनो हेतु कोई विभूति स्वरूप देवताने प्रसन्न करवाना साधन ना रूपमा

होय छे. परंतु परब्रह्म पुरुषोत्तम 'साधन साध्य' नथी तेवो स्पष्ट श्रुति मत छे.

तेवीज रीते पूजा पण क्रियात्मक छे, जेमां 'भक्ति' माटे आवश्यक 'स्नेह' नुं पासु होतुं नथी. भगवान स्वयं कहे छे के "भक्तियोगं स लभते एवं यः पूज्येतु माम", अर्थात एवी रीते जे मारी पूजा करे छे तेने भक्तियोग प्राप्त थाय छे. आ वचन थी स्पष्ट थाय छे के पूजा नी भक्तिथी भिन्नता छे. पूजा एक साधन छे, अने भक्ति तेंनु फल. पूजा मा कोइक फल नी अपेक्षा होय छे जे चक्रवर्ती राज्य थी लइ ब्रह्मलोक नी प्राप्ति सुधी होइ शके, जे पूजा ना प्रकार पर निर्भर करे छे.

परंतु जे भक्ति नो निर्देश श्रीवल्लभाचार्यजी करे छे तेमां फलरुप साक्षात पुरुषोत्तम सिवाय अन्य कोई फलाकांक्षा होती नथी. तेथी श्रीगुसाइंजी 'भक्तिहंस' ग्रंथ मा कहे छे - "भगवत्स्वरूपातिरिक्तफलके कर्मणि ज्ञाने वा न भक्तित्वम, भकतौ च न स्वरपतिरिक्तफलकत्वं, अतो न पूजादिः न्हाक्तिः", अर्थात भगवत स्वरूप ना सिवाय फल आपवा वाळा कर्म के ज्ञान मां भक्ति नथी, अने भक्ति थी भगवत स्वरूप ना सिवाय अन्य कोई फल नी प्राप्ति थती नथी, तेथी पूजा वगेरे ने भक्ति न कही शकाय.

शास्त्रोक्त 'नवधा भक्ति' - "श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पादसेवन, अर्चन, वंदन, दास्य, सख्य, आत्मनिवेदन" मां पांचमी भक्ति 'अर्चन' बताववामां आवी छे. वास्तव मा 'अर्चन' शब्द पूजा ना अर्थ मा ज छे. तेथी स्वाभाविक संदेह थाय के तो तेमां तो अर्चन अर्थात पूजा ने ज भक्ति कहेवामां आवी छे !. तो तेंनु समाधान शुं होइ शके ?. परंतु आनो पण खुलासो श्रीगुसाइंजीए विस्तारपूर्वक कर्यो छे ....

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

કૃષ્ણાશ્રય
જલભેદઃ
નવરત્નસ્તોત્રમ્
નિષ્કામલીલા
પંચપદ્યાનિ
પુષ્ટિ પ્રવાહ મર્યાદાભેદ
ભક્તિવર્ધિની
વિવેક ધૈર્યાશ્રય

ભાવિનના જય શ્રીકૃષ્ણ

* 'भक्ति' नुं तात्पर्य अने 'पुष्टिभक्तिमार्ग' (३०) *

****

श्रीगुसाइंजी 'भक्तिहंस' ग्रन्थ मा समजावे छे के 'नवधा भक्ति' बधाज प्रकार ना भक्तो माटे समान तात्पर्य धरावे छे तेम विचारवु योग्य नथी. ते भक्त नी कक्षा अने अधिकार पर निर्भर करे छे. तेओ कहे छे के धर्म, अर्थ अने काम पुरूषार्थो नी पूर्ति ना रूप मां नवधाभक्ति करवामां आवे त्यांरे ते भक्ति नही परंतु कर्म रूप बने छे. तेवीज रीते ज्यारे नवधाभक्ति नु प्रयोजन अंतःकरण नी शुद्धि होय त्यांरे ते

केवल ज्ञान नुं स्वरूप धारण करे छे. जो नवधाभक्ति करनार नो हेतु मोक्ष प्राप्ति छे, त्यांरे ते उपासना मार्ग नु आचरण छे, कारणके लक्ष भगवान नथी, मोक्षप्राप्ति छे.

रामानुजाचार्यजी इत्यादि भक्ति संप्रदाय ना आचार्यो द्वारा प्रवर्तित 'मर्यादा मार्ग' मा श्रवण, कीर्तन अर्चन आदि ने 'प्रवाहिकी भक्ति' कही छे, जे मुक्ति ना साधन रूप छे. तदर्थ श्रवण भक्ति थी लई आत्मनिवेदन भक्ति सुधी ना नव सोपान उत्तरोत्तर अंतमां प्रेमलक्षणा भक्ति प्राप्त करवाना साधन रुप होवाथी ते ' मर्यादा भक्ति' नु ज स्वरूप छे. तदन्तर्गत 'अर्चन' अर्थात पूजा पण साधन रुपे मर्यादाभक्ति ना अंग रुप छे, तेथी गौण छे. कारण के भक्ति नुं मुख्य तात्पर्य तो पुरुषोत्तम नी प्राप्ति छे, जेने माटे श्रीवल्लभाचार्यजीए 'पुष्टि भक्ति' नो निर्देश कर्यो छे. ते अपने आप माज् फलरुप छे.

पुष्टिभक्ति नु स्वरूप समझावतां श्रीवल्लभाचार्यजी 'भक्तिवर्धिनी' ग्रन्थ मा तेना बे अंग बतावे छे -"सेवायां वा कथायां वा", अर्थात 'नाम सेवा' अने 'स्वरूप सेवा'. ते अर्थ मा 'श्रवण-कीर्तन-स्मरण', नाम सेवा रूप छे, पादसेवन-अर्चन-वंदन' बहिरंग स्वरूप सेवा नु रूप छे, अने 'दास्य-सख्य-आत्मनिवेदन' अंतरंग स्वरूप सेवा नु रूप छे. अने ए रीते नवधाभक्ति समग्र पणे आचारवा मां आवे त्यांरे दास्य, सख्य अने आत्मनिवेदन सिद्ध थतां ते 'प्रेमलक्षणाभक्ति' मा परिणमित थाय, अने त्यारे पूर्णपुरुषोत्तम श्रीकृष्णनी प्राप्ति थई शके, जे भक्ति नु अंतिम लक्ष्य छे.

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

* 'भक्ति' नुं तात्पर्य अने 'पुष्टिभक्तिमार्ग' (३१) *

****

'पुष्टिभक्ति' नी विशेषता ए छे के श्रीवल्लभाचार्यजी तेमां भक्ति नी सम्पुर्णता नो निर्देश करे छे. मनुष्य जीवन नी आध्यात्मिक उन्नति नी चरम सीमा एटले साक्षात पूर्ण पुरुषोत्तम नी प्राप्ति छे. तेज भक्ति नु अंतिम चरण अथवा ध्येय छे. तेज भजनानन्द छे, जे मेळव्या पछी काइंज मेळववानुं बाकी रहेतु नथी.

व्यवहारमा भागवत मां निरूपित नवधा भक्ति ना नव सोपान उत्तरोत्तर चढ़ता भक्त ज्यारे अंतिम तबक्का मां दास्य, अने सख्य पार करी'आत्मनिवेदन' ना पगथिये पहोंचे छे, त्यांरे ते भगवान प्रत्ये ना उत्कट प्रेम नी दशा ने प्राप्त करे छे. ते अवस्थामा भक्त नी प्रत्येक शारीरिक - मानसिक क्रियाओं भगवान मा केंद्रित थई जाय छे.

श्रीवल्लभाचार्यजीए भक्तिवर्धिनी ग्रन्थ मा भक्तिनी ए उत्तरोत्तर अवस्थाओंने प्रेम, आसक्ति अने व्यसन दशा ना रूपमा वर्णवी छे. सिद्धान्त मुक्तावली ग्रन्थ मा साधनरूपा 'तनुवित्तजा' सेवा करता ज्यारे भक्त नु चित्त भगवान मा परोवाई जाय त्यांरे तेने फलरूपा 'मानसी' प्राप्त थाय छे, तेवो निर्देश कर्यो छे.

एवी परमोच्च दशा मा भक्तनु मन भगवान मा केंद्रित थई जता ते मात्र भगवानना गुणानुवाद ना श्रवण कीर्तन मा,तेमनी सुखरूप सेवामां ज तल्लीन थई जाय छे. तेना प्रत्येक कार्यो तेनी चेतना द्वारा मात्र साधन रुपे थता नथी परंतु ते तेना प्रेम नी पराकाष्ठा नु परावर्तन होय छे, जे फल रूप होय छे.

भागवद प्रेम नी आ अवस्था प्राप्त थाय त्यां सुधी भक्तनी साधनावस्था कहेवाय छे, जेनो निर्देश श्रीवल्लभाचार्यजीए "तत्सिद्धयै तनुवित्तजा" थी कर्यो छे. भक्त नो भगवद प्रेम ज्यारे उच्चतम कक्षाए पहोंचे

छे, त्यांरे तेनी भगवान प्रत्येनी प्रत्येक क्रिया मानसी मा कुदरती अने स्वयं संचालित (spontaneous) थई जाय छे. आवी मानसी नी अवस्था राजा आशकरण नी वार्ता प्रसंग मा स्पष्टपणे जोई शकाय छे.

भागवतकार पण कहे छे -"भक्ति नो उद्‌भव भक्ति द्‌वाराज थाय छे". तात्पर्य ए छे के साधन भक्ति नुं रूपांतर ज 'प्रेमलक्षणा भक्ति' रुपे थाय छे. तेथीज श्रीवल्लभाचर्यजी द्‌वारा प्रवर्तित 'पुष्टिभक्तिमार्ग' मा मर्यादाभक्ति के मिश्र पुष्टिभक्ति साधनरूपा छे, अने 'पुष्टिभक्ति' फलरूपा छे. ए प्रकारनी भक्ती नी प्राप्ति मात्र भगवद कृपा ना परिणाम स्वरूपेज थाय छे. जेना मा भगवाने भक्ति नु बीज स्थापित कर्यु होय तेनामाज ते अंकुरित थई पुष्पित, पल्लवित थई फलित थाय छे.

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

* 'भक्ति' नुं तात्पर्य अने 'पुष्टिभक्तिमार्ग' (३२) *

****

उपरोक्त वचनो ना प्रमाणो थी स्पष्ट थाय छे के श्रीवल्लभाचार्यजी द्‌वारा प्रवर्तित पुष्टिमार्ग मा भक्ति भगवान ना मूल स्वरूप पूर्ण पुरुषोत्तम श्रीकृष्ण प्रत्ये नो निरूपाधिक (बिन शर्ती) प्रेम छे, नहीं के तेमना कोई अवतार स्वरूप विभूति नी सोपाधिक (कामना सहित नी) भक्ति, अर्थात कशुक प्राप्त करवानु साधन !.भागवत मां भगवान कपिले निर्गुण - अहेतुकी भक्ति नो ज निर्देश कर्यो छे. तदनुसार श्रीवल्लभाचार्यजी पण कोई अन्य फल प्राप्ति ना साधन तरीके नहीं परंतु निर्गुण भक्ति, जेनो प्रवाह भगवान तरफ अविरतपणे वहे छे. तेज आनंद स्वरूप छे, फल रूपे छे, तेम समाजाव्यू छे.

भागवत मा भगवान कहे छे के "जेवीरीते पवित्र गंगा नदी ना नीर अनेक जंगलों अने पहाड़ो ने भेदी ने सतत समुद्र तरफ वहे छे तेम निर्गुण भक्ति नो प्रवाह लोक अने वेद नी मर्यादा नुं उल्लंघन करी अविरत मारा तरफ वहे छे".. आ कारणे पुष्टिभक्ति, मर्यादा भक्ति जे सगुण भक्ति नु स्वरूप छे, तेनाथी पृथक छे.

ते माटेज श्रीवल्लभाचार्यजी चतुःश्लोकी ग्रन्थ मा आज्ञा करे छे - "सर्वदा-सर्व भावेन भजनीयो व्रजाधिपः, स्वस्यायमेव धर्मो ही नान्यक्वापि कदाचन". मात्र श्रीकृष्णनी भक्ति ज पुष्टिजीव नुं परम लक्ष्य छे. तेथी आगळ कहे छे के जो श्री गोकुलाधीशने सर्व प्रकारे धारण करवांमा आवे तो लौकिक के वैदिक शुं मेलववावा नुं बाकी रहे ?. "यदि श्रीगोकुलाधशो धृतः सर्वात्मना हृदि, ततः किं परं ब्रूहि लौकिकैर वैदिकैरपि"

श्रीवल्लभाचार्यजी नो आशय पुष्टिमार्ग ना प्रवर्तन द्‌वारा आवी भक्तिना स्वरूप ने समजाववानी छे जे स्वयं फल रुपे भगवान श्रीकृष्ण ना आनंद नो निरंतर अनुभव करावे. तेथीज तेओ आ ग्रन्थ मा कृष्ण भक्ति ने पुष्टिजीव नो एक मात्र धर्म एटले के पुष्टिजीवन नो एक मात्र हेतु अने कृष्ण ने पामवा एक मात्र कामना होवा नो निर्देश कर्यो छे.

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

* 'भक्ति' नुं तात्पर्य अने 'पुष्टिभक्तिमार्ग' (३३) *

****

भगवद साक्षात्कार प्राप्त संत कोटि ना भक्तो मां भक्तिनो विकास क्रमशः थयेलो जोवा मले छे, जे तेमने भगवद प्राप्ति ना अंतिम लक्ष्य सुधी पहोंचाड़े छे. परंतु एवा पुष्टिजीवो जेओ पुष्टिभक्ति माटे तत्पर होय तेमने ते केवीरीते प्राप्त थाय तेनो खुलासो श्रीलालुभट्टजीए तेमना 'प्रणयरत्नार्णव' ग्रन्थ मा कर्यो छे. (अध्याय -५).

तदनुसार जेमना पर भगवद कृपा थाय तेज पुष्टिभक्तिमार्ग ना अधिकारी बनी शके छे. तेओ समजावे छे के भगवद कृपा प्रत्यक्ष-गम्य नथी. तेथी तेने अनुमान थी जाणी शकाय छे. आज वात श्रीवल्लभाचार्यजीए निबंन्ध (स. नि.२२६) मां कही छे. तेओ कहे छे के पुष्टिमार्ग मां अभिरुचि थवी ए पुष्टिजीव नुं पर प्रथम लक्षण छे. भगवान जेने पुष्टिमार्गीय फल प्रदान करवा इच्छे छे तेमना मां पुष्टिमार्ग प्रत्ये रुचि उत्पन्न करे छे.

रूचि उत्पन्न थवानो प्रकार समजावता कहे छे के जे जीवोने भगवान पुष्टिमार्ग मा स्वीकारवा इच्छे छे, तेने भगवादकृपाथी भगवादियोनो सत्संग प्राप्त थाय छे. तेमनी कृपाथी ते भगवद भक्तो नी परिचर्या करवानो अवसर प्राप्त थाय छे. ते दरम्यान तेने यथासंभव भगवद कथा-गुणानुवाद नुं श्रवण करवानो, तनूजा सेवादी भक्ति नो अनुभव प्राप्त थाय छे. तेना कारणे तेनी पुष्टिभक्तिमार्ग मां रूचि जागृत थाय छे.

भागवतजी मां पण आनो उल्लेख मले छे. नारदजी कहे छे - "आ प्रकारे निरंतर माहात्माओ नी सेवा करवा थी मारु चित्त शुद्ध थई गयु अने ते माहात्माओ ना अपरिग्रह, संगनिवृत्ति, श्रवण, कीर्तन तथा भगवत-चिंतन वगेरे धर्मो मां मारी रूचि अपनेआप उत्पन्न थई गयी. (भा. १-५-२५).

पुष्टिमार्ग मा रूचि उत्पन्न थवाथी अने श्रवण आदि करवाथी चित्तमा भगवान प्रवेश करे छे, अथवा प्रगट थाय छे, जेनाथी तेनी चित्त शुद्धि थई जाय छे. तेना कारणे बीजी श्रवण, कीर्तन वगेरे नी अनुवृत्ति थाय छे.

भागवतजी ना द्वितीय स्कन्ध मा पण श्रीशुकदेवजी राजा परीक्षित ने एज वात कहे छे - 'भगवान कृष्ण कर्ण रंध्र द्वारा पोताना भक्तो ना भावमय हृदयकमल पर बिराजे छे, अने तेना मनोमल ने दूर करे छे. ए रीते तेमनु अन्तःकरण शुद्ध थई जातां ते श्रीकृष्णना चरंकामकने पछी क्यारेय छोडता नथी. (भा. २-८-५/६).

आ प्रकारे भगवान ना अपरोक्ष अनुभव ने तेनी परोक्ष रुचि कहेवाय छे. जे श्रवणादि भक्ति, सत्पुरुषोनो आदर-सत्कार, तेमना दर्शन, सत्संग आदिथी आविर्भूतं थाय छे. श्रीवलल्लभाचार्यजी सुबोधिनिजी मा कहे छे - "सर्वत्र अलौकिक पदार्थो मा तेना अलौकिक माहात्म्य सांभलवाथी रुचि उत्पन्न थाय छे. (सु. १-२-१५). ए रूचि ज भक्ति नुं नामांतर छे.

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

* 'भक्ति' नुं तात्पर्य अने 'पुष्टिभक्तिमार्ग' (३४) *

****

अगाउ कह्यु तेम संतोना समागम थी तेमज भगवद गुणानुवाद ना श्रवण- कीर्तनादिना माध्यम थी भगवान मां परोक्ष रूचि उत्पन्न थाय छे. ते भक्तिनी प्रारंभिक अवस्था छे. महाप्रभु श्रीवल्लभाचर्यजी

भक्तिवर्धिनी ग्रन्थ मा समजावे छे तेम सृष्टिनी उत्पत्ति समये जीव ज्यारे भगवान थी छूटो पड़े छे त्यांरे तेओ जीव नु वरण पुष्टिजीव तरीके करे त्यारे तेनामां भक्तिनु बीज आरोपित करे छे. आवा भक्तिबीज युक्त भक्त ज्यारे भगवद गुणानुवाद नुं श्रवण करे छे, भगवादियो ना मुखे भगवद वाणी साभले छे त्यांरे तेना हृदय मां भगवद आविर्भाव थाय छे.

भगवाने रोपेलूं भक्तिनुं बीज क्यारेय नष्ट थतु नथी. जन्म-जन्मांतर पर्यन्त भक्तनो बीजभाव अकबंध रहे छे. ऋतुचक्र नी माफक जीव एक जन्म मांथी बीजो जन्म ले छे, जे ऊपर कह्यु तेम उपयुक्त वातावरण प्राप्त थतां अर्थात संत समागम, सत्संग अथवा गुरु प्रेरणा थतां कोइक जन्ममा भक्ति नो बीजभाव भगवद प्रेम रुपे अंकुरित थई शके छे.

तदनुसार, उपरोक्त प्रकारे भगवद आविर्भाव थवाना कारणे जीव ने भगवान मां रूचि जागे छे. ते मात्र परोक्षानुभव न रहेता जीव भगवद भाव नो हृदय मां अनुभवे करे छे, जे तेमां रहेला भक्ति ना बीज ने अंकुरित करे छे. आ अंकुरित थयेलु भक्तिनुं बीज धीरे धीरे नवधाभक्ति ना उत्तरोत्तर तबक्काओ मांथी पसार थई तेने संसारासक्ति छोडावी, भगवद प्रेम मां पल्लवित पुष्पित करे छे, जे विकास पामी भक्तिने उच्चतम अवस्था मा लइ जाय छे.

ज्यारे भक्त ना हृदयमा भगवद प्रेम नी तीव्रता वधे छे, त्यांरे तेनी जगतना पदार्थो मां आसक्ति घटवा मांडे छे, अने प्रेम आसक्ति नु रूप धारण करे छे, त्यारे भक्त भगवद गुणानुवाद ना श्रवण-कीर्तन मां पूर्णतः डूबी जाय छे. तेंनु चित्त भगवान साथे जोडाई जाय छे. आ एवी अवस्था छे जेमां भक्तने दुन्यवी पदार्थो, पोतानु घर-परिवार पण बाधा रूप जणाय छे. आ अवस्था थी आगळ ना तबक्का मां भक्त नु चित्त पूर्णतया भगवान् साथे एकात्म थई जाय छे, जेमां ते भगवान सिवाय एक पल पण रही शकतो नथी. आने व्यसन अवस्था कहे छे. तेमां भक्तना भगवद प्रेमनो प्रवाह भगवान तरफ तेल नी धार नी माफक वहे छे. भक्ति नी आ सर्वोच्च अवस्था छे.

(डॉ.जयेन्द्र सोनी)

* 'भक्ति' नुं तात्पर्य अने 'पुष्टिभक्तिमार्ग' (३५) *

****

आम ज्यारे भक्त व्यसन दशाने प्राप्त थाय छे त्यांरे ते भगवान विना एक क्षण पण रही सकतो नथी. आनु उदाहरण आपणे ८४ वैष्णव नी वार्ता मां गज्जनधावन ना चरित्र मां जोवा मले छे. तेमनी व्यसन दशाना कारणे तेमने श्रीनवनितप्रियाजी थी पलभरनी जुदाई सहन थई शकी न हती.

आवी दशामां भक्तनुं आकर्षण भगवान नी लीला अथवा तेमना गुणो प्रत्ये होतुं नथी परंतु ए स्वरूपासक्ति छे, तेंनु मन स्वयं प्रभुना स्वरूप साथे जोडाई गयेलु होय छे. ते भगवान सिवाय रही शकतो नथी. तेथी व्यसन नी व्याख्या करतां कह्यु छे के व्यसनी ने व्यसन ना पदार्थ विना पलभर पण चालतु नथी.

श्रीवल्लभाचार्यजी तेथीज सिद्धान्तमुक्तावली ग्रन्थ मां 'मानसी सेवा' ने फलात्मक बतावी कहे छे -"चेतस्तत प्रवणं सेवा", अर्थात प्रभुमां चित्त नो योग - चित्तनी संपूर्णतः प्रवणता, तेंनु नाम परम फल रूप 'मानसी सेवा' छे. शांडिल्य सूत्र मां पण प्रेम नी आवी परंमावस्था ने भक्ति बतावी छे. श्रीवल्लभाचार्यजी

तेनेज 'सर्वात्मभाव' कहे छे, जे मानव मन नी सर्वोत्तम उपलब्धि छे, जेमां भक्तने परं संतोष अने परंमानंद नी प्राप्ति थाय छे.

भक्तिवर्धिनी ग्रन्थ मां श्रीवल्लभाचर्यजी माटे ज कहे छे -"यदा स्याद व्यसनं कृष्णे कृतार्थं स्यात्तदैव ही" (भ.व.५) -अर्थात जीवने ज्यारे कृष्ण नुं व्यसन थाय छे त्यांरे ते कृतार्थं थाय छे. तेंनु जीवन धन्य बनी जाय छे. भक्त जीवन नी आथी विशेष सार्थकता शुं होइ शके !

ज्यारे आवी अवस्था भक्तने प्राप्त थाय छे त्यांरे भगवान नो वियोग तेने माटे मृत्यु समान होय छे. त्यारे भक्तनुं जीवन टकाववा फ्लात्मा रूप भगवान करुणायुक्त थइने भक्तना हृदय मां प्रवेश करे छे जेवी रीते लाकडामा अग्नि प्रवेशे छे. भक्त त्यारे जाणे पोताना प्रियतम साथे एकात्मता नो अनुभव करे छे.

आ अवस्था मा श्रीवल्लभाचर्यजी कहे छे - "तादृशस्यापि सततं गेहस्थानं विनाशकं, त्याग कृत्वा यत्तेद्यस्तु, तदार्थार्थैक मानसः, लभते सुदृढां भक्तिम् सर्वत्योप्यधिकां पराम्" (भ.व.६), अर्थात जेनी व्यसन दशा थई होय तेने 'तादृशी' कहे छे, तेवा भगवदीय ने घर विनाशकारी लागे छे. माटे गृहत्याग करीने ते केवल भगवत्प्राप्ति माटे ज मनवालो बनी प्रयत्न करे ते सर्वथी अधिक दृढ़ एवी परम भक्ति ने पामे छे.

व्यसन दशानी परमोच्च अवस्था 'निरोध' कहेवाय छे, जे सर्वात्म भाव मां परिणामे छे. आ एवी स्थिति छे, जे पामीने भक्त भगवान ना अलौकिक आनंद नो अनुभव करे छे.

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

* 'भक्ति' नुं तात्पर्य अने 'पुष्टिभक्तिमार्ग' (३६) *

****

श्रीमहाप्रभुजी भक्तिवर्धिनी ग्रन्थ मा समजावे छे के भक्तना हृदय मां भगवान द्वारा स्थापित बीजभाव दृढ थई जतां तेनी पुष्टिभक्ति अगाउ कह्यु तेम उत्तरोत्तर प्रेम रुपे अंकुरित थई, भगवदासक्ति रुपे पल्लवित थई, व्यसन ना रूपमा ज्यारे फलित थई जाय छे, त्यांरे तेने भगवान ना विरह नी तीव्र अनुभूति थवा मांडे छे. तेना कारणे तेने भगवत स्वरूपनुं आंतर्भजन सिद्ध थाय छे, जे अंततः 'सर्वात्मभाव' मां परिणमे छे.

आ अवस्था मा तेनी सर्व इन्द्रियो नो भगवान मां विनियोग सिद्ध थई, सर्वत्र भगवद-भाव प्रगट थाय छे, जेना कारणे तेने घरनों अने बहार नो भेद भुलाई जाय छे. आवीज स्थिति राजा आशकरण नी थयेल हती. आ अबस्था मां भक्तने घर मां रहेवानु अनिवार्य होतुं नथी. भगवान ना विरह ना तीव्र ताप मां एवा भक्त क्यारेक घरनो त्याग करीने बहार पण निकळी जाय छे, जेनी तेने पोताने पण खबर पड़ती नथी.

आवा भक्त माटे श्रीमहाप्रभुजी निबंन्ध ग्रन्थ ना सर्वनिर्णय प्रकरण मा आज्ञा करे छे तेम ते देह पड़े त्यां सुधी केवल श्रीकृष्ण मां ज पोताना मनने एकाग्र करी ने रहे छे. एवी अवस्था मां भागवत-प्रेम ना प्रबल प्रवाहना कारणे ते स्त्री, पुत्र, स्वजन, प्राण, वित्त आदिमां थी अलिप्त थई जाय छे. त्यारे तेने गृहत्याग उचित लागे छे. तेना कारणे सुबोधिनिजी मा श्रीमदाचार्यचरण आज्ञा करे छे - "गृहस्थितेरउत्कृष्टत्वं न भगवदीयत्व मात्रेण किन्तु भगवता सह स्थित्या भगवत कार्यार्थं वा अन्यथा न स्थातव्यम", (सु. ३-१-२) अर्थात पोतानु भगवादीयपणु ए घरमा रहेवानो स्वस्थ, साचो, दोषरहित हेतु नथी, किन्तु भगवान नी साथे रहेवु अथवा भगवत सेवा माटे रहेवु एज उत्कृष्ट हेतु छे. अन्यथा गृहत्याग ज उचित छे.

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)